

गरवी गुजरात

PRGI No. GJHIN/26/A1393

गरवी गुजरात

PUBLISHED HINDI DAILY FROM SURAT, AHMEDABAD, LUCKNOW

वर्ष : 01
अंक : 042
दि. 14.11.2026,
शनिवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा
SURAT EDITION

दक्षिण चीन सागर पर भारत की दो टूक, अंतरराष्ट्रीय समुद्री कानून से समझौता मंजूर नहीं

नई दिल्ली। हिंद-प्रशांत क्षेत्र में बढ़ती भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और दक्षिण चीन सागर को लेकर जारी क्षेत्रीय विवादों के बीच भारत ने एक बार फिर अंतरराष्ट्रीय समुद्री कानून के पालन को अनिवार्य बताया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 16 और 17 नवंबर को होने वाली फिलीपींस यात्रा से पहले भारत ने स्पष्ट कर दिया है कि चीन और आसियान देशों के बीच दक्षिण चीन सागर को लेकर प्रस्तावित आचार संहिता यानी कोड ऑफ कंडक्ट संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून संधि (यूएनसीएलओएस) के अनुरूप होनी चाहिए। भारत का मानना है कि इस समझौते के जरिए क्षेत्र में शांति और स्थिरता स्थापित करने का प्रयास स्वागतयोग्य है, लेकिन इसके नाम पर अंतरराष्ट्रीय कानूनों और उन देशों के वैध अधिकारों की अनदेखी नहीं की जा सकती, जो चीन और आसियान के बीच चल रही बातचीत का हिस्सा नहीं हैं।

भारत का यह रुख ऐसे समय सामने आया है, जब प्रधानमंत्री मोदी आसियान और पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलनों में हिस्सा लेने के लिए मनीला पहुंचेंगे। उनकी यात्रा के दौरान समुद्री सुरक्षा, क्षेत्रीय सहयोग, व्यापारिक संपर्क और हिंद-प्रशांत क्षेत्र की बदलती परिस्थितियां प्रमुख चर्चा का विषय रहने की संभावना है।

विदेश मंत्रालय में सचिव (पूर्व) रुद्रेंद्र टंडन ने प्रधानमंत्री की यात्रा से पहले भारत का पक्ष स्पष्ट करते हुए कहा कि दक्षिण चीन सागर को लेकर चीन और आसियान देशों के बीच तैयार होने वाली किसी भी आचार संहिता को अंतरराष्ट्रीय समुद्री कानून के अनुरूप होना चाहिए। इसमें विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून संधि (यूएनसीएलओएस) के प्रावधानों का पालन जरूरी है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि प्रस्तावित समझौते से उन देशों के वैध अधिकार और हित प्रभावित नहीं होने चाहिए, जो इस बातचीत में प्रत्यक्ष रूप से शामिल नहीं हैं। भारत का यह बयान केवल एक क्षेत्रीय विवाद पर प्रतिक्रिया नहीं है, बल्कि समुद्री क्षेत्र में नियम आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था और सभी देशों के अधिकारों की रक्षा के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को भी दर्शाता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 16 और 17 नवंबर को फिलीपींस की यात्रा के दौरान 23वें आसियान-भारत शिखर सम्मेलन और 21वें पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे।



इस वर्ष फिलीपींस आसियान की अध्यक्षता कर रहा है। ऐसे में यह यात्रा भारत के लिए दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ रणनीतिक और आर्थिक संबंधों को और मजबूत करने का अवसर मानी जा रही है। भारत की एक्ट ईस्ट नीति में आसियान का विशेष महत्व है। दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों के साथ भारत के संबंध केवल व्यापार और निवेश तक सीमित नहीं हैं, बल्कि समुद्री सुरक्षा, रक्षा सहयोग, संपर्क व्यवस्था, ऊर्जा और क्षेत्रीय स्थिरता जैसे विषय भी इसमें शामिल हैं। हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भारत की बढ़ती सक्रियता के बीच फिलीपींस यात्रा को कूटनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

दक्षिण चीन सागर लंबे समय से एशिया के सबसे संवेदनशील समुद्री विवादों में शामिल रहा है। चीन इस समुद्री क्षेत्र के बड़े हिस्से पर अपना दावा करता है, जबकि फिलीपींस, वियतनाम, मलेशिया और ब्रुनेई सहित कई देश भी यहां अपने समुद्री अधिकारों का दावा करते हैं। इस क्षेत्र में द्वीपों, चट्टानों, समुद्री सीमाओं और विशेष आर्थिक क्षेत्रों को लेकर अलग-अलग देशों के बीच मतभेद हैं। समय-समय पर यहां जहाजों की आवाजाही, गश्त और समुद्री गतिविधियों को लेकर तनाव भी सामने आता रहा है। चीन और आसियान देशों के बीच इस विवाद को नियंत्रित करने के लिए लंबे समय से बातचीत चल रही है। प्रस्तावित कोड ऑफ कंडक्ट का उद्देश्य समुद्री क्षेत्र में गतिविधियों के लिए कुछ साझा नियम निर्धारित करना और विवादों को बढ़ने से रोकना है।

इस आचार संहिता को लेकर बातचीत एक दशक से अधिक समय से जारी है, लेकिन विभिन्न देशों के हितों और दावों के कारण सहमति बनाना आसान नहीं रहा है। चीन और आसियान देशों के बीच इस समझौते का स्वरूप क्या होगा, इसके नियम कितने प्रभावी होंगे और उनका पालन किस प्रकार सुनिश्चित किया जाएगा, ये सभी महत्वपूर्ण प्रश्न हैं। भारत की चिंता इसी बात को लेकर है कि कोई भी क्षेत्रीय व्यवस्था व्यापक अंतरराष्ट्रीय समुद्री कानून के दायरे से बाहर नहीं होनी चाहिए। यदि किसी समझौते में ऐसे प्रावधान शामिल होते हैं, जो अन्य देशों की समुद्री आवाजाही, व्यापारिक गतिविधियों या वैध अधिकारों को प्रभावित करते हैं, तो उसका असर केवल दक्षिण चीन सागर तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि पूरे हिंद-प्रशांत क्षेत्र पर पड़ सकता है।

दक्षिण चीन सागर की अहमियत समझने के लिए इसके भौगोलिक और आर्थिक महत्व को देखना जरूरी है। यह समुद्री क्षेत्र मलक्का जलडमरूमध्य के माध्यम से हिंद महासागर को प्रशांत महासागर से जोड़ता है। इस रास्ते से दुनिया के बड़े व्यापारिक जहाज, ऊर्जा आपूर्ति से जुड़े पोत और मालवाहक जहाज गुजरते हैं। चीन, जापान और दक्षिण कोरिया जैसी प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के लिए यह मार्ग बेहद महत्वपूर्ण है। इन देशों का ऊर्जा आयात और अंतरराष्ट्रीय व्यापार काफी हद तक इसी समुद्री रास्ते पर निर्भर करता है। ऐसे में यहां किसी भी प्रकार का सैन्य तनाव, नाकेबंदी या जहाजों की आवाजाही में बाधा वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला को प्रभावित कर सकती है।

अमेरिकी ऊर्जा सूचना प्रशासन के आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2023 में दुनिया के समुद्री रास्तों से होने वाले कुल पेट्रोलियम और पेट्रोलियम उत्पादों के परिवहन का करीब 37 प्रतिशत हिस्सा दक्षिण चीन सागर से होकर गुजरा। इसी वर्ष वैश्विक तरलीकृत प्राकृतिक गैस (एलएनजी) व्यापार का लगभग 34 प्रतिशत भी इसी समुद्री क्षेत्र के रास्ते हुआ। ये आंकड़े बताते हैं कि दक्षिण चीन सागर केवल कुछ देशों के बीच क्षेत्रीय अधिकारों का विवाद नहीं है, बल्कि वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा और अंतरराष्ट्रीय व्यापार का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। यहां तनाव बढ़ने से समुद्री परिवहन की लागत, बीमा खर्च और वस्तुओं की आपूर्ति पर भी असर पड़ सकता है।

भारत के लिए भी इस समुद्री मार्ग का महत्व बहुत अधिक है। देश का 55 प्रतिशत से ज्यादा व्यापार दक्षिण चीन सागर और मलक्का जलडमरूमध्य से होकर गुजरता है। भारत का दक्षिण-पूर्व एशिया, पूर्वी एशिया और प्रशांत क्षेत्र के देशों के साथ व्यापार लगातार महत्वपूर्ण बना हुआ है। ऐसे में इस मार्ग पर जहाजों की निर्बाध आवाजाही भारत के आर्थिक हितों से सीधे जुड़ी है। यदि क्षेत्र में संघर्ष की स्थिति बनती है या समुद्री मार्गों पर किसी प्रकार की पाबंदी लगती है, तो भारतीय निर्यात और आयात प्रभावित हो सकते हैं। ऊर्जा संसाधनों, औद्योगिक कच्चे माल और तैयार उत्पादों की आपूर्ति में देरी से भारतीय उद्योगों और व्यापारिक गतिविधियों पर भी दबाव बढ़ सकता है।

इसी कारण भारत लगातार इस बात पर जोर देता रहा है कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में समुद्री मार्ग स्वतंत्र, सुरक्षित और निर्बाध रहने चाहिए। भारत की नीति किसी एक देश के खिलाफ खड़े होने के बजाय अंतरराष्ट्रीय नियमों, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और सभी देशों की संप्रभुता तथा वैध अधिकारों के सम्मान पर आधारित रही है। भारत का कहना है कि समुद्री विवादों का समाधान बल प्रयोग या दबाव के माध्यम से नहीं, बल्कि बातचीत और अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत किया जाना चाहिए। यूएनसीएलओएस समुद्री क्षेत्रों में देशों के अधिकारों और दायित्वों को निर्धारित करने वाला प्रमुख अंतरराष्ट्रीय कानूनी ढांचा है। भारत इसी व्यवस्था के पालन को क्षेत्रीय स्थिरता के लिए आवश्यक मानता है।

प्रधानमंत्री मोदी की फिलीपींस यात्रा इस संदर्भ में भारत के लिए विशेष महत्व रखती है। फिलीपींस दक्षिण चीन सागर विवाद से सीधे प्रभावित देशों में शामिल है और भारत के साथ उसके रक्षा तथा समुद्री सहयोग संबंध लगातार मजबूत हुए हैं। दोनों देशों के बीच समुद्री सुरक्षा, रक्षा उपकरणों और रणनीतिक साझेदारी से जुड़े विषयों पर सहयोग बढ़ाने की संभावनाएं हैं। आसियान के साथ भारत की साझेदारी भी हिंद-प्रशांत क्षेत्र में स्थिरता और आर्थिक संपर्क को मजबूत करने का महत्वपूर्ण माध्यम है।

वडोदरा में रसोई गैस सिलेंडर का भीषण विस्फोट, पांच लोग झुलसे

नई दिल्ली। गुजरात के वडोदरा शहर के गजरवाड़ी इलाके में खाना बनाते समय गैस सिलेंडर में हुए जोरदार विस्फोट से बड़ा हादसा हो गया। अचानक हुए धमाके के बाद घर में आग लग गई और वहां मौजूद लोगों में अफरा-तफरी मच गई। इस दुर्घटना में खाना बना रही महिला समेत पांच लोग आग की चपेट में आकर झुलस गए। धमाके की आवाज सुनकर आसपास के लोग भी सहम गए और घटनास्थल की ओर दौड़ पड़े। स्थानीय लोगों की सूचना पर फायर ब्रिगेड की टीम तत्काल मौके पर पहुंची और काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। सभी घायलों को उपचार के लिए अस्पताल पहुंचाया गया है, जहां उनका इलाज जारी है।



प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, घटना वडोदरा के गजरवाड़ी क्षेत्र की है। बताया जा रहा है कि एक घर में महिला रोजमर्रा की तरह खाना बना रही थी। इसी दौरान अचानक रसोई में रखे गैस सिलेंडर में जोरदार विस्फोट हो गया। धमाका इतना तेज था कि घर के भीतर आग फैल गई और वहां मौजूद लोग इसकी चपेट में आ गए। कुछ ही पलों में रसोई और आसपास के हिस्से में आग की लपटें उठने लगीं। हादसे में खाना बना रही महिला के साथ चार अन्य लोग भी झुलस गए। अचानक हुए विस्फोट से किसी को संभलने का मौका तक नहीं मिला।

धमाके की तेज आवाज आसपास के घरों तक सुनाई दी। आवाज सुनते ही स्थानीय लोग घटनास्थल पर पहुंच गए। घर से आग की लपटें और धुआं उठता देखकर इलाके में दहशत फैल गई। लोगों ने तत्काल फायर ब्रिगेड और संबंधित अधिकारियों को घटना की सूचना दी। इस बीच कुछ स्थानीय लोगों ने घायलों को सुरक्षित बाहर निकालने और उन्हें अस्पताल पहुंचाने में मदद की। हादसे के बाद इलाके में कुछ समय तक अफरा-तफरी का माहौल बना रहा।

सूचना मिलते ही दमकल विभाग की टीम आवश्यक उपकरणों के साथ घटनास्थल पर पहुंची। आग तेजी से फैल रही थी, ऐसे में फायर कर्मियों ने बिना देर किए उसे बुझाने का अभियान शुरू किया। टीम ने काफी प्रयास के बाद आग पर नियंत्रण पाया। समय रहते आग बुझा दिए जाने से आसपास के मकानों और अन्य संपत्तियों तक लपटें पहुंचने की आशंका को कम किया जा सका। दमकल कर्मियों ने यह भी सुनिश्चित किया कि घटनास्थल पर आग दोबारा भड़कने का खतरा न रहे।

हादसे में झुलसे पांचों लोगों को तत्काल अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों की निगरानी में उनका उपचार किया जा रहा है। घायलों में खाना बना रही महिला भी शामिल है। फिलहाल सभी की स्वास्थ्य स्थिति को लेकर विस्तृत जानकारी सामने नहीं आई है। चिकित्सकों की ओर से भी उनकी हालत के संबंध में आधिकारिक जानकारी का इंतजार है। स्थानीय लोगों में इस बात को लेकर चिंता बनी हुई है कि रसोई में हुआ विस्फोट इतना शक्तिशाली कैसे हो गया।

सिलेंडर में विस्फोट के कारण घर के अंदर भी नुकसान होने की आशंका जताई जा रही है। हालांकि मकान को हुए नुकसान और घरेलू सामान की क्षति का अभी पूरा आकलन नहीं हो पाया है। शुरुआती जानकारी में हादसे की वजह खाना बनाते समय सिलेंडर में हुआ विस्फोट बताई जा रही है, लेकिन विस्फोट किन परिस्थितियों में हुआ, इसकी स्पष्ट जानकारी सामने आना बाकी है। गैस रिसाव, सिलेंडर की स्थिति अथवा किसी अन्य तकनीकी कारण की पुष्टि जांच के बाद ही हो सकेगी।

इस घटना ने एक बार फिर घरेलू रसोई में गैस सिलेंडर के इस्तेमाल के दौरान सावधानी बरतने की जरूरत को सामने ला दिया है। गैस की गंध आने पर चूल्हा जलाने, बिजली के स्विच चलाने या किसी भी प्रकार की चिंगारी पैदा करने वाली गतिविधि से बचना चाहिए। ऐसी स्थिति में दरवाजे और खिड़कियां खोलकर सुरक्षित स्थान पर जाना तथा गैस आपूर्ति बंद करना जरूरी होता है। फिलहाल वडोदरा के गजरवाड़ी इलाके में हुए इस हादसे के बाद स्थानीय लोग घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना कर रहे हैं।

किसान विरोधी बयान पर रीवा में बवाल, भाजपा सांसद के घर का घेराव करने पहुंचे कांग्रेसी

रीवा। मध्य प्रदेश में किसानों को लेकर दिए गए एक बयान ने राजनीतिक माहौल गरमा दिया है। रीवा से भाजपा सांसद जनार्दन मिश्रा की कथित विवादित टिप्पणी के विरोध में कांग्रेस ने उनके खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। शुक्रवार को प्रदेश किसान कांग्रेस के अध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह चौहान के नेतृत्व में बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता सांसद के आवास का घेराव करने पहुंचे। प्रदर्शनकारियों को रोकने के लिए पुलिस ने पहले से बैरिकेडिंग कर रखी थी, लेकिन कार्यकर्ताओं ने कई बार सुरक्षा घेरा तोड़कर आगे बढ़ने की कोशिश की। इस दौरान पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच धक्का-मुक्की हुई और स्थिति तनावपूर्ण हो गई। भीड़ को नियंत्रित करने के लिए पुलिस को वाटर कैनन चलानी पड़ी और आंसू गैस के गोले छोड़ने पड़े। कांग्रेस ने सांसद के बयान को किसानों का अपमान बताते हुए उनसे इस्तीफे की मांग की है।

जानकारी के अनुसार, भाजपा सांसद जनार्दन मिश्रा ने हाल ही में किसानों को लेकर एक टिप्पणी की थी, जिसे कांग्रेस ने आपत्तिजनक बताते हुए विरोध शुरू कर दिया। कांग्रेस नेताओं का आरोप है कि सांसद ने किसानों को नशेड़ी बताकर देश के अन्नदाताओं का अपमान किया है। इस बयान के बाद से ही प्रदेश कांग्रेस और किसान कांग्रेस के नेता लगातार उनके खिलाफ आवाज उठा रहे हैं। पार्टी ने इस मुद्दे को किसानों के सम्मान से जोड़ते हुए प्रदेशभर में विरोध प्रदर्शन करने का फैसला किया है।

इसी क्रम में शुक्रवार दोपहर प्रदेश किसान कांग्रेस के अध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह चौहान रीवा पहुंचे। उनके नेतृत्व में कांग्रेस कार्यकर्ता एकत्र हुए और



नारेबाजी करते हुए सांसद जनार्दन मिश्रा के आवास की ओर बढ़ने लगे। प्रदर्शनकारियों की योजना सांसद के घर का घेराव कर अपना विरोध दर्ज कराने की थी। जैसे ही कार्यकर्ता आवास के नजदीक पहुंचे, वहां पहले से तैनात पुलिस बल ने उन्हें बैरिकेडिंग लगाकर रोक दिया। पुलिस अधिकारियों ने प्रदर्शनकारियों को समझाने और निर्धारित सीमा से आगे नहीं बढ़ने की अपील की, लेकिन कार्यकर्ता पीछे हटने को तैयार नहीं हुए। प्रदर्शन के दौरान कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने कई बार बैरिकेडिंग पार करने का प्रयास किया। इसको लेकर पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच तीखी नोकझोंक तथा धक्का-मुक्की हुई। दोनों पक्षों के बीच तनाव बढ़ने पर मौके पर अफरा-तफरी का माहौल बन गया। प्रदर्शनकारी सांसद के खिलाफ नारेबाजी करते हुए आगे बढ़ने की कोशिश करते रहे, जबकि पुलिस उन्हें रोकने में जुटी रही। हालात बिगड़ते देख पुलिस ने भीड़ को तितर-बितर करने के लिए वाटर कैनन का इस्तेमाल किया। इसके बाद भी जब प्रदर्शनकारियों की भीड़ नियंत्रित नहीं हुई तो आंसू गैस के गोले छोड़े गए। पुलिस की इस कार्रवाई के बाद मौके पर भगदड़ जैसी स्थिति बन गई और प्रदर्शनकारियों को पीछे हटना पड़ा। प्रदेश किसान कांग्रेस अध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह चौहान ने प्रदर्शन के दौरान सांसद के बयान पर कड़ी आपत्ति जताई। उन्होंने कहा कि किसान देश की अर्थव्यवस्था और खाद्य सुरक्षा की रीढ़ हैं। दिन-रात मेहनत करके वे पूरे देश के लिए अन्न पैदा करते हैं। ऐसे में उनके बारे में अपमानजनक टिप्पणी करना किसी भी जनप्रतिनिधि को शोभा नहीं देता। चौहान ने आरोप लगाया कि भाजपा सांसद ने किसानों को नशेड़ी बताकर उनकी मेहनत, संघर्ष और सम्मान को ठेस पहुंचाई है। कांग्रेस इस तरह के बयान को स्वीकार नहीं करेगी और किसानों के सम्मान की लड़ाई जारी रखेगी। चौहान ने सांसद जनार्दन मिश्रा से तत्काल इस्तीफा देने की मांग की। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि सांसद ने स्वयं अपने पद से इस्तीफा नहीं दिया तो कांग्रेस कार्यकर्ता दिल्ली पहुंचकर भाजपा के शीर्ष नेतृत्व से इस मामले में जवाब मांगेंगे। उनका कहना था कि जनप्रतिनिधियों को सार्वजनिक जीवन में अपनी भाषा और बयानों के प्रति जिम्मेदार होना चाहिए। किसानों के मुद्दे पर किसी भी तरह की अपमानजनक टिप्पणी का विरोध किया जाएगा। इस घटनाक्रम ने रीवा में भाजपा और कांग्रेस के बीच राजनीतिक टकराव को और तेज कर दिया है। कांग्रेस इस बयान को लेकर प्रदेश स्तर पर आंदोलन कर रही है, वहीं सांसद के आवास के बाहर हुए प्रदर्शन और पुलिस कार्रवाई ने मामले को और चर्चा में ला दिया है। फिलहाल इस विवाद के केंद्र में सांसद की टिप्पणी, किसानों के सम्मान का सवाल और कांग्रेस की इस्तीफे की मांग है।

SIR में नाम कटे, SSR में फिर बढ़े मतदाता, नौ राज्यों में चौंकाने वाली तस्वीर

नई दिल्ली। देश में मतदाता सूची को शुद्ध और पारदर्शी बनाने के लिए चल रही चुनाव आयोग की कवायद के बीच वोटरों की संख्या को लेकर एक नया सवाल खड़ा हो गया है। कुछ महीने पहले स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (एसआईआर) के दौरान लाखों मतदाताओं के नाम सूची से हटाए गए थे। मृत, स्थायी रूप से दूसरी जगह जा चुके और एक से अधिक स्थानों पर दर्ज मतदाताओं की पहचान कर उनके नाम हटाने की प्रक्रिया पूरी की गई थी। इसके बाद कई राज्यों में मतदाताओं की संख्या में उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की गई। लेकिन अब स्पेशल समरी रिवीजन (एसएसआर) की ड्राफ्ट मतदाता सूची सामने आने के बाद तस्वीर बदलती दिखाई दे रही है। 12 नवंबर 2026 को जारी प्रारूप सूची में नौ राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में मतदाताओं की संख्या बढ़ गई है। गोवा में सबसे अधिक तीन प्रतिशत और राजस्थान में 2.22 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक है कि जब एसआईआर के दौरान बड़ी संख्या में नाम हटाए गए थे, तो कुछ ही समय बाद मतदाताओं की संख्या फिर कैसे बढ़ने लगी?

दरअसल, एसआईआर और एसएसआर दोनों का उद्देश्य मतदाता सूची को अधिक सटीक, अद्यतन और भरोसेमंद बनाना है, लेकिन दोनों प्रक्रियाओं का स्वरूप और प्राथमिकताएं अलग-अलग हैं। एसआईआर के तहत चुनाव आयोग ने मतदाता सूची की व्यापक और गहन जांच कराई। इसमें बूथ स्तर के अधिकारियों ने घर-घर जाकर मतदाताओं से संपर्क किया और उनके विवरण का सत्यापन किया। पुराने रिकॉर्ड की जांच के साथ यह पता लगाने की कोशिश की गई कि सूची में दर्ज व्यक्ति वास्तव में संबंधित पते पर रहता है या नहीं। इस दौरान मृत मतदाताओं, स्थायी रूप से स्थान बदल चुके लोगों और एक से अधिक स्थानों पर नाम दर्ज कराने वालों की पहचान की गई। जिन प्रविष्टियों की पुष्टि नहीं हो सकी या जो नियमों के अनुरूप नहीं थीं, उन्हें निर्धारित प्रक्रिया के तहत हटाया गया। इसके विपरीत एसएसआर में मौजूदा मतदाता सूची को आधार बनाकर उसमें आवश्यक बदलाव और सुधार किए जाते हैं। इस प्रक्रिया का विशेष जोर नए पात्र मतदाताओं को जोड़ने, पहले छूट गए योग्य नागरिकों को सूची में शामिल करने और नाम-पते जैसी जानकारियों को दुरुस्त करने पर रहता है। इसके साथ ही मतदाताओं को दावे और आपत्तियां दर्ज कराने का अवसर भी दिया जाता है। इस तरह एसआईआर जहां सूची की गहराई से जांच करने की प्रक्रिया है, वहीं एसएसआर उसके बाद सूची को लगातार अद्यतन रखने का माध्यम है। एसएसआर के तहत मतदाता सूची में नाम जुड़वाने का सबसे महत्वपूर्ण अवसर उन युवाओं को मिलता है, जो 18 वर्ष की आयु पूरी कर चुके हैं और पहली बार मतदान का अधिकार प्राप्त कर रहे हैं। इसके अलावा ऐसे पात्र नागरिक भी आवेदन कर सकते हैं, जिनका नाम किसी कारणवश पहले मतदाता सूची में शामिल नहीं हो पाया था। कई बार स्थान परिवर्तन, दस्तावेजों से जुड़ी परेशानी या आवेदन की प्रक्रिया पूरी नहीं होने के कारण योग्य नागरिक सूची से बाहर रह जाते हैं। एसएसआर उन्हें अपना नाम दर्ज कराने का अवसर देता है। वहीं, पहले से मतदाता सूची में शामिल लोगों को अपने नाम, पते और अन्य विवरणों में गलती सुधारने की सुविधा भी मिलती है।

मणिपुर में फिर खूनी वारदात, दो वाहनों पर अंधाधुंध गोलीबारी में चार की मौत

इंफाल। मणिपुर में जातीय तनाव और हिंसा के बीच एक बार फिर निर्दोष लोगों को निशाना बनाया गया है। शुक्रवार को इंफाल-उखरुल मार्ग पर न्यू हेवन इलाके में उग्रवादियों ने दो वाहनों पर ताबड़तोड़ फायरिंग कर दी। इस हमले में मां-बेटे और भाई-बहन समेत चार लोगों की मौत हो गई। मृतक अलग-अलग गाड़ियों में सवार होकर इंफाल की ओर जा रहे थे, तभी घात लगाकर किए गए हमले में उन्हें निशाना बनाया गया। अचानक हुई गोलीबारी से इलाके में दहशत फैल गई। घटना के बाद क्षेत्र में सुरक्षा को लेकर चिंता और गहरा गई है। हमलावरों की पहचान और वारदात के पीछे की वजह का फिलहाल खुलासा नहीं हुआ है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, हमला इंफाल-उखरुल रोड पर स्थित न्यू हेवन इलाके में हुआ। बताया जा रहा है कि चारों लोग दो अलग-अलग वाहनों में सफर कर रहे थे। इनमें से दो लोग मारुति स्विफ्ट कार में सवार थे, जबकि अन्य दो बोलेरो में यात्रा कर रहे थे। इसी दौरान हथियारबंद हमलावरों ने दोनों वाहनों पर अचानक गोलियां बरसानी शुरू कर दीं। हमले की तीव्रता इतनी अधिक थी कि वाहन सवारों को संभलने या बचने का मौका नहीं मिल सका। गोली लगने से चारों की मौके पर ही मौत हो गई।

मृतकों की पहचान शांगशाक गांव निवासी कपांगखुई आरएस और हाओलेला आरएस तथा तशर गांव निवासी अगस्त न्गालुंग और खानमिला के रूप में हुई है। बताया गया है कि कपांगखुई आरएस और हाओलेला आरएस आपस में भाई-बहन थे, जबकि अगस्त न्गालुंग और खानमिला मां-बेटे थे। एक ही हमले में दो परिवारों के चार सदस्यों की मौत से उनके गांवों में शोक का माहौल है। घटना ने एक बार फिर



राज्य में आम नागरिकों की सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

वारदात की जानकारी सामने आने के बाद स्थानीय लोगों में भय और आक्रोश का माहौल है। इंफाल-उखरुल मार्ग पर इस तरह की गोलीबारी ने लोगों की आवाजाही को लेकर असुरक्षा की भावना बढ़ा दी है। फिलहाल हमले के दौरान इस्तेमाल किए गए हथियारों, हमलावरों की संख्या और उनके भागने के रास्ते सहित कई महत्वपूर्ण पहलुओं पर विस्तृत जानकारी का इंतजार है। सुरक्षा एजेंसियां घटना से जुड़े तथ्यों की पड़ताल कर रही हैं।

इस हत्याकांड पर कांग्रेस विधायक दल के नेता के. मेघचंद्र ने भी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने लगातार जारी हिंसा और आम लोगों की जान जाने पर चिंता जताते हुए केंद्र तथा राज्य सरकारों की भूमिका पर सवाल उठाए। उनका कहना है कि राज्य में हिंसा का सिलसिला रुकने का नाम नहीं ले रहा है और आम नागरिकों को लगातार इसकी कीमत चुकानी पड़ रही है। विपक्ष ने भी इस घटना को राज्य में सुरक्षा व्यवस्था की गंभीर स्थिति से जोड़कर देखा है।

मणिपुर में यह हमला ऐसे समय हुआ है, जब राज्य के अन्य हिस्सों से भी गोलीबारी और हिंसक घटनाओं की खबरें सामने आ रही हैं। इससे पहले गुरुवार सुबह सेनापति और कांगपोकपी जिलों की सीमा के पास स्थित ताफो कुकी गांव में फायरिंग की घटना हुई थी। इस गोलीबारी में करीब 40 वर्षीय एक महिला की मौत हो गई थी, जबकि दो अन्य लोग घायल हो गए थे। घटना के बाद राष्ट्रीय राजमार्ग-2 के आसपास के इलाकों में दहशत फैल गई थी। लगातार दो दिनों में हुई इन घटनाओं ने राज्य के सुरक्षा हालात को लेकर चिंता और बढ़ा दी है।

गौरतलब है कि मणिपुर में मई 2023 में घाटी में रहने वाले मेइतेई और पहाड़ी क्षेत्रों के कुकी समुदायों के बीच जातीय संघर्ष शुरू हुआ था। इसके बाद से राज्य लंबे समय तक हिंसा, आगजनी, गोलीबारी और विस्थापन की समस्या से जूझता रहा है। इस संघर्ष में अब तक कम से कम 306 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 49 लोग लापता बताए गए हैं। हिंसा के कारण हजारों परिवारों को अपने घर छोड़कर राहत शिविरों में शरण लेनी पड़ी। कई इलाकों में सामान्य जनजीवन, कारोबार, शिक्षा और आवागमन पर भी व्यापक असर पड़ा है।

इस वर्ष फरवरी से पहाड़ी जिलों में कुकी और नागा समुदायों के बीच हुई झड़पों में भी कम से कम 50 लोगों की जान जाने की जानकारी सामने आई है। इससे स्पष्ट है कि राज्य में तनाव केवल एक क्षेत्र या एक समुदाय तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि अलग-अलग इलाकों में सुरक्षा संबंधी चुनौतियां बनी हुई हैं। लगातार हो रही घटनाओं के बीच आम लोगों में शांति और स्थिरता की उम्मीद कमजोर पड़ती दिखाई दे रही है।

न्यू हेवन में दो वाहनों पर हुए ताजा हमले ने मणिपुर में शांति बहाली की कोशिशों के सामने एक नई चुनौती खड़ी कर दी है। चार लोगों की मौत ने यह सवाल फिर खड़ा किया है कि आखिर कब आम नागरिक बिना डर के सड़कों पर सफर कर सकेंगे। फिलहाल लोगों की निगाहें जांच और सुरक्षा एजेंसियों की कार्रवाई पर टिकी हैं। राज्य में स्थायी शांति के लिए हिंसा पर प्रभावी नियंत्रण, दोषियों की पहचान और सभी समुदायों के बीच विश्वास बहाली बेहद जरूरी मानी जा रही है।

मैसूर में दुनिया का पहला एलईडी डोम तारामंडल शुरू, विज्ञान और अंतरिक्ष अनुसंधान को मिलेगा नया आयाम

मैसूर। भारत में विज्ञान और अंतरिक्ष अनुसंधान को आम लोगों, विशेषकर युवाओं तक पहुंचाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मैसूर में 'कॉसमॉस-मैसूर प्लैनेटेरियम' का उद्घाटन किया। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एस्ट्रोफिजिक्स (आईआईए) की ओर से विकसित यह भारत का पहला एलईडी डोम प्लैनेटेरियम है, जिसे दुनिया का पहला एलईडी डोम तारामंडल बताया जा रहा है। चामुंडी पहाड़ियों की तलहटी में स्थित मैसूर विश्वविद्यालय परिसर में तैयार इस अत्याधुनिक केंद्र का उद्देश्य खगोल विज्ञान की शिक्षा, प्रशिक्षण और वैज्ञानिक जागरूकता को बढ़ावा देना है। उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत विज्ञान के क्षेत्र में लगातार नई उपलब्धियां हासिल कर रहा है और कॉसमॉस प्लैनेटेरियम के रूप में मैसूर ने देश की वैज्ञानिक यात्रा में एक नया अध्याय जोड़ दिया है। उन्होंने इसे युवाओं में जिज्ञासा, खोज और अनुसंधान की भावना विकसित करने वाला महत्वपूर्ण केंद्र बताया।

प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि 21वीं सदी का भारत विज्ञान और नवाचार को विकास का प्रमुख आधार बनाकर आगे बढ़ रहा है। देश ने लंबे समय तक 'जय जवान, जय किसान' के मंत्र को अपनाया। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने इसमें 'जय विज्ञान' जोड़ा और उन्होंने स्वयं 'जय अनुसंधान' का मंत्र देकर शोध और नवाचार को राष्ट्रीय विकास से जोड़ने का प्रयास किया। उन्होंने कहा कि आज भारत के युवा विज्ञान के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा और क्षमता का प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्हें बेहतर अवसर, आधुनिक तकनीक और आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराए जाएं तो वे दुनिया के सामने नए कीर्तिमान स्थापित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि भारत में खगोल विज्ञान की परंपरा अत्यंत प्राचीन रही है। हमारे पूर्वजों ने आधुनिक दूरबीनों और वैज्ञानिक उपकरणों के अभाव में भी आकाश का सूक्ष्म अध्ययन किया। उन्होंने ग्रहों और तारों की गति को समझा, समय की गणना की, पंचांग और कैलेंडर तैयार किए तथा सूर्य और चंद्र ग्रहण की गणना करने में उल्लेखनीय सफलता हासिल की। आर्यभट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य और नीलकंठ सोमयाजी जैसे विद्वानों ने गणित और खगोल विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। प्रधानमंत्री ने कहा कि उस दौर में आज जैसी उन्नत तकनीक उपलब्ध नहीं थी, इसके बावजूद भारतीय विद्वानों ने जटिल गणनाएं और ऐसी खोजें कीं, जिनका वैज्ञानिक इतिहास में विशेष स्थान है।



प्रधानमंत्री ने तारामंडलों की उपयोगिता पर जोर देते हुए कहा कि विज्ञान को केवल किताबों तक सीमित रखने के बजाय उसे अनुभव और प्रयोग के माध्यम से समझने का अवसर देना जरूरी है। प्लैनेटेरियम और विज्ञान केंद्र बच्चों तथा युवाओं को अंतरिक्ष, ग्रहों, तारों और ब्रह्मांड की दुनिया से परिचित कराते हैं। ज

चाय पर चर्चा

सार्थक बने छात्र संघों की राजनीति

हाल में दिल्ली के जामिया मिल्लिया इस्लामिया में दो सप्ताह से अधिक चले छात्र आंदोलन के बाद छात्रसंघ चुनाव बहाल करने पर विश्वविद्यालय प्रशासन और छात्रों के बीच सहमति बन गई। प्रशासन ने आगामी शैक्षणिक सत्र शुरू होने के बाद निर्धारित समयसीमा में चुनाव कराने का आश्वासन दिया। छात्रों ने दो दशकों से अधिक समय से निष्क्रिय पड़े छात्रसंघ की बहाली के लिए संघर्ष किया, लेकिन इसी संघर्ष के दौरान जिस तरह संस्थान के परिसरों में आपत्तिजनक नारे लिखे गए, उससे यही पता चला कि छात्र राजनीति अभी भी भटकाव का शिकार है और उसका सरोकार गैर शिक्षण मुद्दों की ओर अधिक है। यह शुभ संकेत नहीं। जामिया का घटनाक्रम छात्र प्रतिनिधित्व, विश्वविद्यालय की जवाबदेही, युवाओं की राजनीतिक चेतना और शैक्षणिक अनुशासन के बीच संतुलन की आवश्यकता को गंभीरता से रेखांकित करता है। छात्रसंघ की बहाली का निर्णय विश्वविद्यालयों में छात्र प्रतिनिधित्व की जरूरतों पर नए सिरे से विचार करने को प्रेरित करता है, क्योंकि यह एक तथ्य है कि समय के साथ छात्र संघों की राजनीति भटक गई और इसीलिए कई शिक्षण संस्थानों में उस पर प्रतिबंध लगाने पड़े। भारत में छात्रसंघ चुनावों के लिए कोई देशव्यापी प्रतिबंध लागू नहीं है। विभिन्न विश्वविद्यालयों के नियमों, परिस्थितियों और प्रशासनिक व्यवस्थाओं में भिन्नताएं हैं। यही वजह है कि छात्र राजनीति से जुड़े विमर्श में भी व्यापक भिन्नताएं दिखाई देती हैं। सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश पर गठित पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त जेएम लिंगदोह की अध्यक्षता वाली समिति ने 2006 में छात्रसंघ चुनावों के संचालन के लिए कुछ महत्वपूर्ण सिफारिशें प्रस्तुत की थीं। उनमें चुनावी खर्च पर नियंत्रण, उम्मीदवारों की पात्रता, बाहरी राजनीतिक हस्तक्षेप को सीमित करना तथा चुनावी प्रक्रिया को निष्पक्ष बनाना प्रमुख रूप से शामिल था। सर्वोच्च न्यायालय ने इन सिफारिशों को स्वीकार करते हुए विश्वविद्यालयों को निर्धारित मानकों के अनुरूप छात्र प्रतिनिधित्व की व्यवस्था विकसित करने का निर्देश दिया था। इस कानूनी नियमन का उद्देश्य छात्र राजनीति को सीमित करना नहीं, बल्कि उसे अधिक पारदर्शी, जवाबदेह और अनुशासित बनाना था, लेकिन दुर्भाग्य से इनका प्रभाव आंशिक ही रहा। इस कारण शिक्षण संस्थाओं में छात्रों की बहुआयामी भागीदारी न होने से छात्रों, शिक्षकों और प्रशासन के बीच संवाद कमजोर हुआ और वैचारिक विमर्श का स्तर भी कमतर हुआ। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि छात्रों की नेतृत्व क्षमता कमजोर हुई, जिससे इन संस्थाओं में छात्र आक्रामकता और अराजकता को बल मिला। उच्च शिक्षण संस्थानों में राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का आक्रामक स्वरूप वैचारिक संवाद से हटकर शक्ति प्रदर्शन तक सीमित होता जा रहा है। हालांकि एक समय छात्र राजनीति ने कुशल नेतृत्व तैयार किया है, लेकिन अनेक शैक्षणिक परिसरों में बाहरी राजनीतिक हस्तक्षेप, जातीय, धार्मिक और वैचारिक ध्रुवीकरण, धनबल, बाहुबल और हिंसा ने इसके मूल उद्देश्यों को कमजोर किया है। छात्रसंघ चुनाव केवल छात्र प्रतिनिधि चुनने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह छात्रों को अपनी समस्याएं उठाने, नेतृत्व विकसित करने और लोकतांत्रिक व्यवहार को जानने-समझने का अवसर भी प्रदान करता है। छात्र संवाद तथा वैचारिक विमर्श की गुणवत्ता में भी उत्तरोत्तर वृद्धि होना समय की मांग है। छात्र संगठनों से अकादमिक वातावरण के निर्माण और संस्था में रचनात्मक भूमिका निभाने की अपेक्षा की जाती है। निश्चित ही विरोध का अधिकार महत्वपूर्ण है, परंतु विरोध की मर्यादा का संरक्षण भी उतना ही जरूरी है। इसी संतुलन से संस्था में शैक्षिक वातावरण का निर्माण होता है। छात्र परिषद चुनावों पर दिल्ली विश्वविद्यालय के एक हालिया शोध में संकेत दिया गया है कि छात्र राजनीति छात्रों में राजनीतिक जागरूकता को तो बढ़ावा देती है, लेकिन राजनीतिक हिंसा इसके लोकतांत्रिक लाभ को सीमित करती है। यह निष्कर्ष बताता है कि शैक्षणिक संस्थानों में चुनाव कराना ही पर्याप्त नहीं, बल्कि छात्रों को सार्थक भागीदारी का अवसर देना भी जरूरी है। इससे ही संस्थानों में वैचारिक विमर्श को बढ़ावा मिलेगा और बेहतर शैक्षणिक परिवेश बनेगा। छात्र राजनीति की सफलता शैक्षणिक संस्थाओं में ऐसी पीढ़ी तैयार करने में है, जो अपने अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों के प्रति भी प्रतिबद्ध हो। देश को आज ऐसी पीढ़ी की आवश्यकता है, जो लोकतंत्र को केवल एक व्यवस्था के रूप में न देखे, बल्कि उसे जीवन मूल्य के रूप में भी स्वीकार करे। आज भविष्य के उन उत्तरदायी कर्णधारों को गढ़ने का समय है, जो अपनी ऊर्जा हंगामे में नहीं, बल्कि पारस्परिक संवाद, शोध, नीतिगत बहसों और रचनात्मक प्रतिरोध में लगाएं। यदि शिक्षण संस्थाएं इस दिशा में उदाहरण प्रस्तुत करती हैं, तो यह माहौल न केवल शैक्षणिक परिसरों के माहौल को बेहतर बनाएगा, बल्कि भारतीय लोकतंत्र की सर्वोच्च संस्था यानी संसद तक स्वस्थ, परिपक्व और दूरदर्शी नेतृत्व की नींव को भी सुदृढ़ करेगा। यह समय की मांग है कि छात्र राजनीति अपने आदर्शों की ओर लौटे। छात्र राजनीति पारंपरिक दलगत राजनीति का अखाड़ा नहीं बननी चाहिए।

अयोध्या की आस्था के बीच फिर गरमाने लगी सियासत

अयोध्या का राजनीतिक इतिहास केवल चुनावी नारों और आरोप-प्रत्यारोप तक सीमित नहीं है। यह करोड़ों लोगों की धार्मिक भावनाओं, लंबे सामाजिक संघर्ष और संवैधानिक प्रक्रिया से जुड़ा विषय है। राम मंदिर निर्माण के बाद देश को यह उम्मीद थी कि अयोध्या विकास, पर्यटन, सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक सद्भाव का नया उदाहरण बनेगी।



अयोध्या सदियों से भारतीय संस्कृति, सनातन परंपरा और करोड़ों लोगों की आस्था का केंद्र रही है। भगवान श्रीराम की जन्मभूमि होने के कारण इस नगरी का धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व केवल भारत तक सीमित नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में इसकी विशिष्ट पहचान है। लंबे संघर्ष, कानूनी प्रक्रिया और ऐतिहासिक फैसले के बाद अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण इस शहर के इतिहास में एक नए अध्याय की शुरुआत बन गया। आज अयोध्या में विकास की नई इबारत लिखी जा रही है। सड़कों, हवाई अड्डे, रेलवे स्टेशन, धार्मिक स्थलों और पर्यटन सुविधाओं का विस्तार हुआ है। दीपोत्सव ने अयोध्या को वैश्विक पहचान दिलाई है और देश-विदेश से श्रद्धालुओं का आगमन लगातार बढ़ रहा है। इसके बावजूद अयोध्या का राजनीतिक महत्व कम होने के बजाय एक बार फिर बढ़ता दिखाई दे रहा है।

अयोध्या में बहुत कुछ बदल गया है। मंदिर निर्माण के बाद श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ी है, स्थानीय व्यापार को नई गति मिली है और धार्मिक पर्यटन ने अर्थव्यवस्था को मजबूत आधार दिया है। प्राचीन धार्मिक विरासत और आधुनिक विकास का संगम इस नगरी को नई पहचान दे रहा है। लेकिन एक चीज ऐसी है, जिसका तापमान समय के साथ कम नहीं हुआ है। वह है अयोध्या को लेकर राजनीतिक दलों के बीच जारी वैचारिक संघर्ष। राम मंदिर का मुद्दा लंबे समय तक भारतीय राजनीति का केंद्र रहा और अब मंदिर निर्माण के बाद भी इसके राजनीतिक प्रभाव का इस्तेमाल अलग-अलग दल अपने-अपने तरीके से करने की कोशिश कर रहे हैं। इसी राजनीतिक परिदृश्य में समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव का 12 दिसंबर को अयोध्या जाकर रामलला के दर्शन करने का प्रस्ताव चर्चा का विषय बन गया है। रामजन्मभूमि आंदोलन के दौरान कारसेवकों पर गोली चलाए जाने की घटना और तत्कालीन सपा सरकार की भूमिका आज भी राजनीतिक बहस का महत्वपूर्ण हिस्सा है। मुलायम सिंह यादव के शासनकाल में 1990 में कारसेवकों पर हुई गोलीबारी को लेकर भाजपा और संत समाज लगातार समाजवादी पार्टी को घेरते रहे हैं। ऐसे में अखिलेश यादव की अयोध्या यात्रा की घोषणा को केवल धार्मिक यात्रा के रूप में नहीं, बल्कि राजनीतिक रणनीति के रूप में भी देखा जा रहा है। अखिलेश यादव लंबे समय से फैजाबाद लोकसभा सीट पर समाजवादी पार्टी की जीत को अपनी राजनीतिक उपलब्धि के रूप में प्रस्तुत करते रहे हैं। अब अयोध्या को लेकर उनके बयानों में भी राजनीतिक संदेश स्पष्ट दिखाई देता है। वह अयोध्या को सनातन तीर्थाटन की वैश्विक राजधानी बनाने, राम मंदिर की व्यवस्थाओं में पारदर्शिता लाने और कथित भूमि अनियमितताओं की जांच कराने जैसे मुद्दे उठा रहे हैं। उनके इन बयानों पर भाजपा की ओर से सवाल खड़े किए जा रहे हैं। भाजपा का तर्क है कि अयोध्या में धार्मिक पर्यटन, आधारभूत सुविधाओं और मंदिर परिसर के विकास के लिए पहले से व्यापक स्तर पर काम हो रहा है। ऐसे में विपक्ष के वादों को राजनीतिक अवसरवाद के रूप में देखा जा रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी इस मुद्दे पर सपा अध्यक्ष को स्पष्ट राजनीतिक संदेश दिया है। दीपोत्सव के अवसर पर उन्होंने कहा कि अयोध्या आने से पहले समाजवादी पार्टी को अपने पुराने कृत्यों के लिए माफी मांगनी चाहिए। उनका संकेत 1990 में कारसेवकों पर हुई गोलीबारी की ओर था। मुख्यमंत्री के इस बयान के बाद अयोध्या के संत समाज की प्रतिक्रिया भी सामने आई। कई संतों ने अखिलेश यादव से मांग की कि वह रामजन्मभूमि आंदोलन के दौरान मारे गए कारसेवकों के परिवारों से माफी मांगें और अपने पूर्ववर्ती नेतृत्व की भूमिका पर स्पष्ट रुख रखें।

संत समाज का कहना है कि किसी भी व्यक्ति के अयोध्या आने, रामलला के दर्शन करने या सरयू में स्नान करने पर उन्हें आपत्ति नहीं है। भगवान श्रीराम सबके आराध्य हैं और उनकी जन्मभूमि सभी श्रद्धालुओं के लिए खुली है। लेकिन रामजन्मभूमि आंदोलन के दौरान जिन कारसेवकों ने अपने प्राण गंवाए, उनके बलिदान की अनदेखी नहीं की जा सकती। संतों के अनुसार, अखिलेश यादव को अयोध्या यात्रा से पहले उस ऐतिहासिक घटना पर अपनी पार्टी का पक्ष स्पष्ट करना चाहिए। उनका मानना है कि धार्मिक आस्था के साथ राजनीतिक सुविधा के अनुसार व्यवहार नहीं किया जाना चाहिए।

इस विवाद में सुभासपा अध्यक्ष ओमप्रकाश राजभर के बयान ने भी राजनीतिक चर्चा को तेज किया है। उन्होंने अखिलेश यादव पर निशाना साधते हुए कहा कि वह अयोध्या, मथुरा और काशी की बात तो करते हैं, लेकिन भगवान श्रीराम, काशी विश्वनाथ और भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन को लेकर उनकी भूमिका सवालों के घेरे में रही है। राजभर ने कहा कि अखिलेश यादव को अयोध्या जाकर रामलला के सामने नतमस्तक होना चाहिए और अतीत की घटनाओं के लिए क्षमा मांगनी चाहिए।

दूसरी ओर, अखिलेश यादव की राजनीति का प्रमुख आधार रहा पीडीए यानी पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक समीकरण भी इस पूरे घटनाक्रम में महत्वपूर्ण माना जा रहा है। समाजवादी पार्टी का यह सामाजिक गठबंधन पिछले कुछ चुनावों में उसकी राजनीतिक रणनीति का केंद्र रहा है। लेकिन अयोध्या और राम मंदिर जैसे भावनात्मक विषयों पर बदलते राजनीतिक माहौल ने सभी दलों को अपनी रणनीति पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर किया है। सपा कार्यालय के बाहर लगाए गए एक पोस्टर में पीडीए का नया अर्थ प्रस्तुत करते हुए इसे पहले दर्शन और आशीर्वाद से जोड़ने की कोशिश की गई। पोस्टर में पीडीए को आदरणीय अखिलेश यादव के दर्शन और आशीर्वाद के रूप में प्रचारित किया गया। इसे पार्टी की ओर से धार्मिक प्रतीकों के माध्यम से अपने राजनीतिक समर्थक वर्ग तक पहुंचने की कोशिश के रूप में देखा गया।

अखिलेश यादव की ओर से यह कहना कि भगवान सबके हैं और वह अयोध्या, मथुरा, काशी तथा केदारनाथ सहित सभी धार्मिक स्थलों पर जाएंगे, उनकी राजनीतिक रणनीति में संभावित बदलाव का संकेत माना जा रहा है। दरअसल, राम मंदिर निर्माण और प्राण प्रतिष्ठा के बाद देश की राजनीति में धार्मिक आस्था का प्रभाव और अधिक स्पष्ट हुआ है। भाजपा लंबे समय से हिंदुत्व और राम मंदिर को अपनी राजनीतिक पहचान के प्रमुख मुद्दों के रूप में प्रस्तुत करती रही है। ऐसे में विपक्षी दलों के सामने चुनौती है कि वे धार्मिक आस्था के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हुए अपने पारंपरिक सामाजिक और राजनीतिक समीकरणों को भी बनाए रखें।

इसी बीच कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी का बाबरी ढांचे के विध्वंस से जुड़ा पुराना अनुभव भी चर्चा में आया है। उन्होंने ब्रिटिश समाचार पत्र 'द गार्जियन' को दिए साक्षात्कार में छह दिसंबर 1992 की घटना को टेलीविजन पर देखकर भावुक होने का जिक्र किया था। इस बयान के बाद राजनीतिक हलकों में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि राम मंदिर आंदोलन और उससे जुड़ी ऐतिहासिक घटनाओं पर विपक्षी गठबंधन के अलग-अलग नेताओं के विचार कितने समान हैं। कांग्रेस और समाजवादी पार्टी की राजनीतिक साझेदारी के बीच रामजन्मभूमि का विषय एक संवेदनशील मुद्दा बना हुआ है।

समाजवादी पार्टी के कुछ सांसदों के बयानों ने भी इस विवाद को और हवा दी है। सपा सांसद एसपी सिंह पटेल ने तत्कालीन मुलायम सिंह यादव सरकार के फैसले का बचाव करते हुए कहा कि कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए गोली चलाने का निर्णय आवश्यक था। वहीं अन्य सपा नेताओं के बयानों को लेकर भी भाजपा और संत समाज ने आपत्ति जताई है। इन बयानों के कारण पार्टी के सामने यह चुनौती खड़ी हो गई है कि वह अपने पुराने राजनीतिक रुख और वर्तमान धार्मिक संदेश के बीच संतुलन कैसे स्थापित करे।

अयोध्या का राजनीतिक इतिहास केवल चुनावी नारों और आरोप-प्रत्यारोप तक सीमित नहीं है। यह करोड़ों लोगों की धार्मिक भावनाओं, लंबे सामाजिक संघर्ष और संवैधानिक प्रक्रिया से जुड़ा विषय है। राम मंदिर निर्माण के बाद देश को यह उम्मीद थी कि अयोध्या विकास, पर्यटन, सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक सद्भाव का नया उदाहरण बनेगी। लेकिन राजनीतिक दलों के बीच जारी बयानबाजी यह बताती है कि रामजन्मभूमि का प्रभाव अभी भी राजनीतिक विमर्श में गहराई से मौजूद है। वास्तविक प्रश्न यह है कि क्या अयोध्या को केवल चुनावी लाभ के लिए याद किया जाएगा या इसके विकास, स्वच्छता, श्रद्धालुओं की सुविधाओं, स्थानीय रोजगार और सांस्कृतिक संरक्षण को भी राजनीतिक प्राथमिकता बनाया जाएगा? राम मंदिर के निर्माण के बाद अयोध्या के सामने नई संभावनाएं हैं। यहां आने वाले श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधाएं देना, स्थानीय लोगों के हितों की रक्षा करना और धार्मिक पर्यटन को टिकाऊ बनाना समय की मांग है।

अयोध्या की पहचान भगवान श्रीराम की मर्यादा, त्याग, करुणा और न्याय के आदर्शों से है। इसलिए यहां की राजनीति में भी संवाद, संयम और जिम्मेदारी दिखाई देनी चाहिए। किसी भी दल को धार्मिक आस्था के नाम पर राजनीतिक लाभ लेने के बजाय अपने कार्यों और नीतियों से जनता का विश्वास जीतना चाहिए। अयोध्या का महत्व किसी एक राजनीतिक दल की उपलब्धि या विरोधी दल की विफलता से कहीं बड़ा है। यह करोड़ों लोगों की आस्था का केंद्र है। राजनीति का तापमान चाहे जितना बढ़े, अयोध्या की असली पहचान श्रीराम के आदर्शों, सनातन संस्कृति और सामाजिक समरसता से ही कायम रहनी चाहिए।

टेक्नॉलॉजी

सिर्फ 35 रुपये में डेटा के साथ ओटीटी मनोरंजन का मौका, Vi ने पेश किया नया वाउचर

मोबाइल उपभोक्ताओं को कम कीमत में इंटरनेट और मनोरंजन की सुविधा देने के लिए टेलीकॉम कंपनियों के बीच प्रतिस्पर्धा लगातार बढ़ रही है। इसी कड़ी में वोडाफोन आइडिया (Vi) ने अपने ग्राहकों के लिए 35 रुपये का नया डेटा वाउचर पेश किया है। इस किफायती पैक की खासियत यह है कि इसमें इंटरनेट डेटा के साथ ओटीटी प्लेटफॉर्म पर मनोरंजन का लाभ भी दिया जा रहा है। कंपनी के इस ऑफर में ग्राहकों को एक जीबी डेटा के साथ 28 दिनों तक ओटीटी कंटेंट देखने की सुविधा मिलेगी। कम कीमत में डिजिटल मनोरंजन का आनंद लेने वाले मोबाइल यूजर्स के लिए यह पैक उपयोगी विकल्प बन सकता है।

Vi का 35 रुपये वाला वाउचर उन ग्राहकों को ध्यान में रखकर पेश किया गया है, जिन्हें अपने मौजूदा मोबाइल प्लान के साथ अतिरिक्त डेटा और ओटीटी सेवाओं की जरूरत होती है। इस पैक में एक जीबी 4जी या 5जी डेटा दिया जाता है, जिसकी वैधता सात दिनों की है। यानी ग्राहक रिचार्ज कराने के बाद अगले सात दिनों तक इस अतिरिक्त डेटा का इस्तेमाल कर सकते हैं। हालांकि, इस सुविधा का लाभ लेने के लिए मोबाइल नंबर पर कंपनी का एक वैध बेस प्लान सक्रिय होना जरूरी है। यह स्वतंत्र रिचार्ज प्लान नहीं, बल्कि मौजूदा पैक के साथ इस्तेमाल किया जाने वाला एड-ऑन वाउचर है।

इस ऑफर की सबसे खास बात इसके साथ मिल ने वाला ओटीटी लाभ है। कंपनी ग्राहकों को Vi Movies & TV ऐप का एक्सेस उपलब्ध कराती है। इसके माध्यम से अलग-अलग मनोरंजन प्लेटफॉर्म का कंटेंट मोबाइल पर देखा जा सकता है। इस सुविधा में Sony LIV, JioHotstar, Shemaroo और कोरियन ड्रामा के लिए Playflix जैसे प्लेटफॉर्म शामिल हैं। ग्राहक उपलब्ध विकल्पों में से अपनी पसंद के दो ओटीटी प्लेटफॉर्म चुन सकते हैं। इन चुने हुए प्लेटफॉर्म का लाभ 28 दिनों तक लिया जा सकता है।

हालांकि, ओटीटी सुविधा के इस्तेमाल को लेकर कुछ शर्तें भी हैं। ग्राहक इस ऑफर के तहत एक साथ सभी उपलब्ध प्लेटफॉर्म का लाभ नहीं उठा सकेंगे। उन्हें दिए गए विकल्पों में से केवल दो सेवाओं का चयन करना होगा। इसके अलावा Vi Movies & TV ऐप के माध्यम से मिलने वाली यह सुविधा मोबाइल तक सीमित है। यानी ग्राहक इस पैक के ओटीटी लाभ का इस्तेमाल स्मार्टफोन पर कर सकेंगे। ऐसे में यह ऑफर उन लोगों के लिए ज्यादा उपयोगी है, जो नियमित रूप से मोबाइल पर फिल्में, वेब सीरीज, टीवी कार्यक्रम और अन्य डिजिटल कंटेंट देखते हैं।

टेलीकॉम बाजार में ओटीटी सेवाओं को रिचार्ज प्लान के साथ जोड़ना अब कंपनियों की प्रमुख रणनीति बन चुका है। पहले ग्राहक इंटरनेट डेटा और कॉलिंग के लिए अलग-अलग रिचार्ज कराते थे, लेकिन अब कंपनियां अतिरिक्त सुविधाओं के माध्यम से अपने प्लान को आकर्षक बनाने की कोशिश कर रही हैं। खासकर ऐसे ग्राहकों को ध्यान में रखा जा रहा है, जो कम बजट में मनोरंजन की कई सुविधाएं चाहते हैं। Vi का 35 रुपये वाला वाउचर इसी रणनीति का हिस्सा माना जा सकता है। ओटीटी और डेटा के मामले में रिलायंस जियो तथा भारती एयरटेल भी अपने ग्राहकों को अलग-अलग कीमतों पर अतिरिक्त सुविधाएं उपलब्ध कराते हैं। जियो का 103 रुपये वाला डेटा पैक इस श्रेणी में एक विकल्प है। इसमें ग्राहकों को पांच जीबी डेटा दिया जाता है। इसके साथ 28 दिनों के लिए ओटीटी सेवाओं का लाभ भी मिलता है। इस तरह जियो उन ग्राहकों को आकर्षित करने की कोशिश करता है, जिन्हें अधिक डेटा के साथ डिजिटल मनोरंजन की सुविधा चाहिए।

वहीं, एयरटेल भी अपने ग्राहकों के लिए ओटीटी सुविधाओं वाला डेटा पैक उपलब्ध कराता है। कंपनी के 200 रुपये वाले पैक में 28 दिनों के लिए Airtel Xstream Play के माध्यम से कई मनोरंजन प्लेटफॉर्म का एक्सेस दिया जाता है। इसमें Prime Video, JioHotstar, ZEE5 Premium, Sony LIV और YouTube सहित 18 से अधिक ओटीटी प्लेटफॉर्म की सामग्री देखने की सुविधा शामिल है। इस प्रकार एयरटेल का पैक उन ग्राहकों के लिए आकर्षक हो सकता है, जो एक ही सब्सक्रिप्शन के माध्यम से अलग-अलग श्रेणियों का मनोरंजन चाहते हैं।

तीनों कंपनियों के ऑफर पर नजर डालें तो Vi का 35 रुपये वाला वाउचर शुरुआती कीमत के लिहाज से काफी सस्ता है। हालांकि, इसमें डेटा की मात्रा केवल एक जीबी है और ओटीटी के लिए दो प्लेटफॉर्म चुनने की सीमा निर्धारित है। दूसरी ओर जियो अधिक डेटा दे रहा है, जबकि एयरटेल कई मनोरंजन सेवाओं तक पहुंच उपलब्ध कराने पर जोर दे रहा है। इसलिए ग्राहकों के लिए केवल रिचार्ज की कीमत देखना पर्याप्त नहीं होगा। उन्हें यह भी समझना होगा कि उन्हें कितने डेटा की जरूरत है और वे किस तरह का डिजिटल कंटेंट देखना पसंद करते हैं। Vi का नया वाउचर उन उपभोक्ताओं के लिए खास हो सकता है, जिनके पास पहले से सक्रिय मोबाइल रिचार्ज है और वे कम खर्च में ओटीटी मनोरंजन का लाभ लेना चाहते हैं।

विचार प्रवाह

एआईबीई-22 का एडमिट कार्ड कल होगा जारी, 29 नवंबर को परीक्षा



ऑल इंडिया बार एग्जामिनेशन (एआईबीई)-22 में शामिल होने की तैयारी कर रहे अभ्यर्थियों के लिए महत्वपूर्ण सूचना है। बार काउंसिल ऑफ इंडिया (बीसीआई) की ओर से परीक्षा का एडमिट कार्ड 14 नवंबर 2026 को जारी किया जाएगा। परीक्षा के लिए पंजीकरण कराने वाले उम्मीदवार आधिकारिक वेबसाइट allindiabarexamination.com पर जाकर अपना प्रवेश पत्र डाउनलोड कर सकेंगे। एडमिट कार्ड जारी होने के बाद अभ्यर्थियों को सलाह दी गई है कि वे समय रहते इसे डाउनलोड कर लें और उसमें दर्ज सभी जानकारियों का सावधानीपूर्वक मिलान कर लें।

एआईबीई परीक्षा देशभर में कानून के क्षेत्र में पेशेवर रूप से कार्य करने की पात्रता प्राप्त करने के उद्देश्य से आयोजित की जाती है। इस परीक्षा में सफल होने वाले अभ्यर्थियों को सर्टिफिकेट ऑफ प्रैक्टिस (सीओपी) प्रदान किया जाता है, जो उन्हें वकालत के पेशे में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक होता है। ऐसे में इस परीक्षा में शामिल होने वाले उम्मीदवारों के लिए एडमिट कार्ड एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इसके बिना परीक्षा केंद्र में प्रवेश नहीं मिलेगा। अभ्यर्थियों को प्रवेश पत्र के साथ निर्धारित पहचान पत्र भी लेकर जाना होगा।

एडमिट कार्ड डाउनलोड करने के लिए उम्मीदवारों को सबसे पहले बार काउंसिल ऑफ इंडिया की आधिकारिक वेबसाइट पर जाना होगा। वेबसाइट के होमपेज पर एआईबीई-22 एडमिट कार्ड से संबंधित लिंक उपलब्ध कराया जाएगा। इस लिंक पर क्लिक करने के बाद अभ्यर्थियों को अपना लॉगिन विवरण दर्ज करना होगा। आवश्यक जानकारी भरकर सबमिट करने पर प्रवेश पत्र स्क्रीन पर दिखाई देगा। इसके बाद उम्मीदवार इसे डाउनलोड कर लें और भविष्य में उपयोग के लिए इसका प्रिंटआउट सुरक्षित रख लें। प्रवेश पत्र डाउनलोड करने के बाद उसमें अपना नाम, रोल नंबर, पंजीकरण संख्या, परीक्षा केंद्र का पता, परीक्षा की तारीख और समय सहित अन्य विवरणों की जांच करना जरूरी होगा। यदि किसी प्रकार की त्रुटि दिखाई देती है तो उम्मीदवारों को तत्काल परीक्षा आयोजित करने वाली संस्था से संपर्क करना चाहिए। परीक्षा के दिन अभ्यर्थियों को एडमिट कार्ड पर दिए गए निर्देशों का पालन करना होगा। परीक्षा केंद्र पर निर्धारित समय से पहले पहुंचना भी आवश्यक होगा।

एआईबीई-22 की परीक्षा 29 नवंबर 2026 को आयोजित की जाएगी। इसमें अभ्यर्थियों से कानून की विभिन्न शाखाओं से संबंधित 100 बहुविकल्पीय प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रश्नपत्र में संवैधानिक कानून, भारतीय दंड संहिता, नागरिक प्रक्रिया संहिता, पारिवारिक कानून, प्रशासनिक विधि, कंपनी कानून, साइबर कानून तथा श्रम एवं औद्योगिक कानून जैसे महत्वपूर्ण विषय शामिल होंगे। इसके अतिरिक्त कानून के अन्य निर्धारित क्षेत्रों से भी प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

परीक्षा की तैयारी कर रहे उम्मीदवारों को अब शेष समय में महत्वपूर्ण कानूनी प्रावधानों, अधिनियमों और विषयवार प्रश्नों का नियमित अभ्यास करना चाहिए। साथ ही परीक्षा से संबंधित आधिकारिक दिशा-निर्देशों पर भी नजर रखनी चाहिए, ताकि अंतिम समय में किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े।

फैक्ट ऑफ द डे

आधुनिक भारत के निर्माण में अमिट छाप छोड़ गए पंडित जवाहरलाल नेहरू

भारत के इतिहास में कुछ व्यक्तित्व ऐसे हैं, जिनका योगदान केवल उनके कार्यकाल तक सीमित नहीं रहता, बल्कि आने वाली पीढ़ियों की दिशा और सोच को भी प्रभावित करता है। पंडित जवाहरलाल नेहरू ऐसे ही व्यक्तित्व थे। स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने एक ऐसे राष्ट्र की नींव मजबूत करने का प्रयास किया, जो सदियों की गुलामी से निकलकर लोकतंत्र, विकास, वैज्ञानिक सोच और आधुनिकता के रास्ते पर आगे बढ़ रहा था। स्वतंत्रता आंदोलन में महात्मा गांधी के साथ उनकी भूमिका हो या आजादी के बाद देश को एक संगठित और मजबूत राष्ट्र बनाने की चुनौती, नेहरू का जीवन भारतीय इतिहास के महत्वपूर्ण अध्यायों में शामिल है। बच्चों के बीच वे 'चाचा नेहरू' के नाम से लोकप्रिय हुए, जबकि उनके जन्मदिन 14 नवंबर को देशभर में बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। जवाहरलाल नेहरू का जन्म 14 नवंबर 1889 को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में एक संपन्न कश्मीरी पंडित परिवार में हुआ था। उनके पिता मोतीलाल नेहरू प्रसिद्ध वकील और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रमुख नेताओं में से एक थे। उनकी माता स्वरूपरानी नेहरू धार्मिक और संवेदनशील स्वभाव की महिला थीं। परिवार में जवाहरलाल सबसे बड़े थे। उनकी बहन विजयलक्ष्मी पंडित ने आगे चलकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व किया और संयुक्त राष्ट्र महासभा की अध्यक्ष बनने वाली पहली महिला बनीं। दूसरी बहन कृष्णा हठीसिंग लेखिका के रूप में प्रसिद्ध



हुईं। नेहरू का बचपन आर्थिक संपन्नता और बौद्धिक वातावरण में बीता। उनके पिता चाहते थे कि बेटे को अच्छी से अच्छी शिक्षा मिले। इसी उद्देश्य से उन्हें उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड भेजा गया। उन्होंने हैरो स्कूल में पढ़ाई की और बाद में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के ट्रिनिटी कॉलेज से प्राकृतिक विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने कानून की पढ़ाई पूरी की। इंग्लैंड में बिताए वर्षों के दौरान उनका परिचय पश्चिमी राजनीतिक विचारों, उदारवाद, समाजवाद और राष्ट्रवादी आंदोलनों से हुआ। आयरलैंड के स्वतंत्रता संघर्ष और यूरोप की राजनीतिक परिस्थितियों ने भी उनके विचारों को प्रभावित किया। 1912 में भारत लौटने के बाद उन्होंने वकालत शुरू की, लेकिन उनका मन धीरे-धीरे देश की राजनीतिक परिस्थितियों की ओर आकर्षित होने लगा। वर्ष 1916 में उनका विवाह कमला नेहरू से हुआ। इसी दौरान उनकी मुलाकात महात्मा गांधी से हुई, जिसने उनके जीवन की दिशा बदल दी। गांधीजी के नेतृत्व में चल रहे राष्ट्रीय आंदोलन ने नेहरू को गहराई से प्रभावित किया। 1919 में रॉलेट एक्ट के विरोध और उसके बाद देश में बढ़ते जनआक्रोश ने उन्हें सक्रिय राजनीति की ओर प्रेरित किया। नेहरू ने असहयोग आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। उन्होंने विदेशी वस्त्रों और सुविधाओं का त्याग कर खादी को अपनाया। उनके पिता मोतीलाल नेहरू ने भी राष्ट्रीय आंदोलन के प्रभाव में अपनी जीवनशैली में बड़ा बदलाव किया। आंदोलन के दौरान जवाहरलाल को कई बार जेल जाना पड़ा, लेकिन जेल की कठिनाइयां उनके संकल्प को कमजोर नहीं कर सकीं। वे युवाओं और किसानों के बीच तेजी से लोकप्रिय होने लगे। उन्हें लगता था कि भारत की आजादी केवल सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक बदलाव का भी अवसर होनी चाहिए। 1924 में वे इलाहाबाद नगर निगम के अध्यक्ष चुने गए। इस पद पर रहते हुए उन्होंने स्थानीय प्रशासन और नागरिक सुविधाओं से जुड़े कामों का अनुभव प्राप्त किया। प्रशासनिक स्तर पर सहयोग की कमी से असंतुष्ट होकर उन्होंने दो वर्ष बाद पद छोड़ दिया। 1926 से 1928 के बीच उन्होंने अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के महासचिव के रूप में भी काम किया। इस दौरान उनकी राजनीतिक सक्रियता लगातार बढ़ती गई। 1928 में कांग्रेस के भीतर भारत के भविष्य को लेकर विचार-विमर्श हुआ। एक पक्ष ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर स्वशासन का दर्जा चाहता था, जबकि जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचंद्र बोस जैसे युवा नेता पूर्ण स्वतंत्रता की मांग कर रहे थे। नेहरू का मानना था कि भारत को आधी आजादी स्वीकार नहीं करनी चाहिए। दिसंबर 1929 में लाहौर में आयोजित कांग्रेस के ऐतिहासिक अधिवेशन में उन्हें अध्यक्ष चुना गया। इसी अधिवेशन में पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव पारित हुआ। 26 जनवरी 1930 को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाने का संकल्प लिया गया और नेहरू ने राष्ट्रीय ध्वज फहराकर स्वतंत्रता के लक्ष्य को जन-जन तक पहुंचाने का संदेश दिया। सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आ

तेज रफ्तार रेंज रोवर ने रैपिडो बाइक को मारी टक्कर, एक की मौत

अहमदाबाद। शहर में तेज रफ्तार और लापरवाही से वाहन चलाने का एक और दर्दनाक मामला सामने आया है। शिलाज सर्कल के पास गुरुकृपा ट्रेलर्स चौराहे पर तेज गति से आ रही रेंज रोवर कार ने रैपिडो बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि बाइक पर पीछे बैठे हर्षद कुमार पुरबिया गंभीर रूप से घायल हो गए और उपचार के दौरान उनकी मौत हो गई, जबकि बाइक चला रहे प्रदीप कुमार भी गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे के बाद कार चालक घायलों की मदद करने के बजाय मौके से फरार हो गया। घटना की सूचना मिलने पर बोपाल पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज और वाहन की नंबर प्लेट के आधार पर जांच करते हुए रेंज रोवर चालक राघवेंद्र कुशवाहा को गिरफ्तार किया। पुलिस जांच में आरोपी के बापूनगर से भाजपा विधायक का भतीजा होने की जानकारी सामने आई है। हालांकि, गिरफ्तारी के बाद उसे थाने से ही जमानत मिल जाने की खबर है। इस घटना ने एक बार फिर अहमदाबाद में तेज रफ्तार वाहनों से होने वाली दुर्घटनाओं, हिट एंड रन के मामलों और प्रभावशाली परिवारों से जुड़े आरोपियों के खिलाफ कानून के समान पालन को लेकर बहस छेड़ दी है।

जानकारी के अनुसार, दुर्घटना शिलाज सर्कल के पास गुरुकृपा ट्रेलर्स चौराहे पर हुई। बताया जा रहा है कि रेंज रोवर कार तेज रफ्तार से गुजर रही थी। इसी दौरान कार चालक का वाहन पर नियंत्रण नहीं रहा और उसने रैपिडो बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। बाइक पर प्रदीप कुमार चालक के रूप में मौजूद थे, जबकि हर्षद कुमार पुरबिया पीछे की सीट पर बैठे हुए थे। दोनों अपने गंतव्य की ओर जा रहे थे, लेकिन रास्ते में तेज रफ्तार कार की टक्कर ने उनकी यात्रा को हादसे में बदल दिया। टक्कर के बाद बाइक सवार सड़क पर दूर जा गिरे। दोनों को गंभीर चोटें आईं और वे सड़क पर घायल अवस्था में पड़े रहे।

हादसे की आवाज सुनकर आसपास मौजूद लोग मौके पर पहुंच गए। कुछ ही देर में घटनास्थल पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। अचानक हुई दुर्घटना के कारण वहां अफरा-तफरी का माहौल बन गया। स्थानीय लोगों ने घायलों को संभालने और उन्हें अस्पताल पहुंचाने में मदद की। गंभीर रूप से घायल हर्षद कुमार पुरबिया



को चिकित्सकीय सहायता दी गई, लेकिन उनकी जान नहीं बचाई जा सकी। इस हादसे में प्रदीप कुमार भी गंभीर रूप से घायल हुए हैं और उनका उपचार जारी है। एक व्यक्ति की मौत और दूसरे के गंभीर रूप से घायल होने की घटना ने परिवारों को गहरे सदमे में डाल दिया है। हर्षद कुमार की मौत से उनके परिजनों पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है।

दुर्घटना के बाद सबसे गंभीर बात यह रही कि रेंज रोवर चालक मौके पर रुकने के बजाय वहां से फरार हो गया। सड़क दुर्घटना के बाद घायल व्यक्ति को तत्काल चिकित्सा सहायता की जरूरत होती है। ऐसे समय में वाहन चालक का मौके से भाग जाना पीड़ितों के लिए स्थिति को और अधिक गंभीर बना सकता है। इस मामले में भी कार चालक के फरार होने के बाद पुलिस को उसकी पहचान करने के लिए जांच शुरू करनी पड़ी। घटना की सूचना मिलते ही बोपाल पुलिस सक्रिय हुई और दुर्घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालनी शुरू की।

पुलिस ने घटनास्थल के आसपास लगे कैमरों की रिकॉर्डिंग की जांच की। फुटेज में दुर्घटना में शामिल रेंज रोवर कार दिखाई दी। इसके बाद पुलिस ने वाहन की पहचान करने के लिए उसकी नंबर प्लेट पर ध्यान केंद्रित किया। नंबर प्लेट के आधार पर कार के बारे में जानकारी जुटाई गई और पुलिस आरोपी चालक तक पहुंच गई। जांच के बाद पुलिस ने रेंज रोवर कार को जब्त कर लिया तथा उसके चालक राघवेंद्र कुशवाहा को गिरफ्तार कर लिया। इस तरह हादसे के बाद मौके से फरार हुआ चालक पुलिस की जांच के दायरे में आ गया।

पुलिस की जांच में आरोपी के बापूनगर से भाजपा विधायक का भतीजा होने की जानकारी सामने आने के बाद यह मामला और अधिक चर्चा में आ गया। राजनीतिक परिवार से संबंध होने की बात सामने आने के कारण लोगों के बीच यह सवाल भी उठने लगा कि ऐसे गंभीर मामलों में कार्रवाई किस तरह की जाती है। हालांकि, किसी आरोपी का राजनीतिक या प्रभावशाली परिवार से संबंध होना दुर्घटना की जांच और कानून की प्रक्रिया से अलग विषय है। सड़क दुर्घटना में किसी की जान जाने के मामले में सबसे महत्वपूर्ण तथ्य हादसे की परिस्थितियां, चालक की भूमिका और उपलब्ध साक्ष्य होते हैं। इन सभी पहलुओं की निष्पक्ष जांच जरूरी है।

मामले में राघवेंद्र कुशवाहा की गिरफ्तारी के बाद उसे थाने से ही जमानत मिल जाने की खबर सामने आई है। एक व्यक्ति की मौत और दूसरे के गंभीर रूप से घायल होने के बाद आरोपी को जमानत मिलने की जानकारी ने घटना को लेकर लोगों की चिंता बढ़ा दी है। हालांकि, जमानत मिलना अपने आप में मामले का अंत नहीं है। जांच और कानूनी प्रक्रिया आगे भी जारी रह सकती है। दुर्घटना की गंभीरता, उपलब्ध साक्ष्य और लागू कानूनी प्रावधानों के आधार पर आगे की कार्रवाई तय होगी। ऐसे मामलों में यह भी जरूरी है कि जांच के दौरान किसी तरह का दबाव या पक्षपात न हो और पीड़ित परिवार को न्याय पाने का पूरा अवसर मिले।

पुलिस की प्रारंभिक जांच में यह आशंका भी जताई गई है कि आरोपी पहले भी दुर्घटनाओं में शामिल रहा हो सकता है। हालांकि, इस संबंध में अभी विस्तृत जांच की जा रही है और पूर्व की किसी घटना में उसकी संलिप्तता की पुष्टि होना बाकी है। यदि जांच में पहले हुई दुर्घटनाओं से संबंधित तथ्य सामने आते हैं, तो वे भी मामले की गंभीरता को समझने में महत्वपूर्ण हो सकते हैं। फिलहाल पुलिस दुर्घटना के कारणों, कार की गति, चालक की भूमिका और हादसे के बाद उसके मौके से फरार होने सहित सभी पहलुओं की पड़ताल कर रही है।

अहमदाबाद में हुआ यह हादसा एक बार फिर तेज रफ्तार और लापरवाही से वाहन चलाने के खतरों की याद दिलाता है। शहर की सड़कों पर बढ़ते वाहनों के दबाव के बीच यातायात नियमों का पालन करना पहले से कहीं अधिक जरूरी हो गया है। सड़क पर चलने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपनी सुरक्षा के साथ दूसरे लोगों की जिंदगी की जिम्मेदारी भी लेकर चलता है। तेज रफ्तार में वाहन चलाना, यातायात नियमों की अनदेखी करना और दुर्घटना के बाद मौके से भाग जाना ऐसी प्रवृत्तियां हैं, जिनसे सड़क सुरक्षा व्यवस्था के सामने गंभीर चुनौती पैदा होती है।

हिट एंड रन की घटनाओं में सबसे अधिक परेशानी पीड़ित परिवारों को उठानी पड़ती है। किसी परिवार का सदस्य रोजमर्रा के काम से घर से निकलता है और एक दुर्घटना उसकी जिंदगी हमेशा के लिए बदल देती है। पीछे रह जाते हैं परिजन, जिनके लिए किसी अपने की मौत का दुख कभी पूरा नहीं होता। इस मामले में हर्षद कुमार पुरबिया की मौत ने भी उनके परिवार को ऐसी ही पीड़ा दी है। वहीं, घायल प्रदीप कुमार के परिवार के सामने उनके उपचार और स्वस्थ होने की चिंता है।

सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए केवल यातायात नियम बनाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनका सख्ती से पालन और उल्लंघन करने वालों के खिलाफ निष्पक्ष कार्रवाई भी आवश्यक है। वाहन चालकों को निर्धारित गति सीमा का पालन करना चाहिए और सड़क पर अन्य वाहन चालकों तथा पैदल चलने वालों की सुरक्षा का ध्यान रखना चाहिए। दुर्घटना होने पर घायलों को तत्काल सहायता पहुंचाना और पुलिस को सूचना देना मानवीय तथा कानूनी जिम्मेदारी है। फिलहाल बोपाल पुलिस इस मामले की जांच में जुटी है। अब जांच के निष्कर्ष और आगे की कानूनी कार्रवाई पर सबकी नजर रहेगी।

श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए पीएम मोदी का अंबाजी दौरा रद्द, गांधीनगर में मंत्रिमंडल के साथ करेंगे रात्रिभोज

गांधीनगर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 14 नवंबर को लाभ पंचमी के अवसर पर प्रसिद्ध अंबाजी मंदिर में दर्शन और पूजा-अर्चना करने का प्रस्तावित कार्यक्रम रद्द कर दिया गया है। दिवाली की छुट्टियों के चलते मंदिर में लगातार बढ़ रही श्रद्धालुओं की भीड़ और लाभ पंचमी पर बड़ी संख्या में दर्शनार्थियों के पहुंचने की संभावना को देखते हुए यह फैसला लिया गया है। प्रधानमंत्री के दौरे के दौरान सुरक्षा व्यवस्था और यातायात प्रबंधन के कारण आम श्रद्धालुओं को किसी तरह की असुविधा न हो, इसे ध्यान में रखते हुए कार्यक्रम में बदलाव किया गया है। संशोधित कार्यक्रम के अनुसार, प्रधानमंत्री अब गुजरात प्रवास के दौरान गांधीनगर में ही रात्रि विश्राम करेंगे और राज्य सरकार के मंत्रियों के साथ रात्रिभोज में शामिल होंगे।

निर्धारित कार्यक्रम के मुताबिक, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शुक्रवार, 13 नवंबर की रात करीब 8:30 बजे अहमदाबाद एयरपोर्ट पहुंचेंगे। उनके आगमन को लेकर प्रशासन और सुरक्षा एजेंसियों की ओर से आवश्यक तैयारियां की गई हैं। एयरपोर्ट पर पहुंचने के बाद प्रधानमंत्री सीधे गांधीनगर के लिए रवाना होंगे। वहां वे लोकभवन में रात्रि विश्राम करेंगे। पहले 14 नवंबर को लाभ पंचमी के अवसर पर अंबाजी मंदिर पहुंचकर दर्शन-पूजन करने की योजना थी, लेकिन मंदिर परिसर और आसपास के क्षेत्रों में श्रद्धालुओं की संभावित भीड़ को देखते



हुए इस कार्यक्रम को निरस्त कर दिया गया है।

प्रधानमंत्री के गुजरात दौरे के दौरान राज्य मंत्रिमंडल के सदस्यों के साथ रात्रिभोज का कार्यक्रम भी निर्धारित किया गया है। यह आयोजन मुख्यमंत्री निवास पर होगा, जिसमें मुख्यमंत्री सहित गुजरात मंत्रिमंडल के सभी सदस्य शामिल होंगे। इसके अलावा प्रदेश भाजपा के प्रमुख नेताओं की मौजूदगी भी प्रस्तावित है। रात्रिभोज को प्रधानमंत्री के गुजरात प्रवास के दौरान राज्य सरकार और संगठन के वरिष्ठ नेताओं के साथ मुलाकात के अवसर के रूप में देखा जा रहा है। हालांकि, इस आयोजन का मुख्य स्वरूप रात्रिभोज का ही रहेगा। इसमें राज्य के मंत्रियों और पार्टी के प्रमुख नेताओं की उपस्थिति रहेगी।

अंबाजी मंदिर में दर्शन का कार्यक्रम रद्द किए जाने के पीछे श्रद्धालुओं की सुविधा को प्रमुख वजह बताया गया है। गुजरात के बनासकांठा जिले में स्थित अंबाजी मंदिर देश के प्रमुख शक्तिपीठों में गिना जाता है। मां अंबा के इस प्रसिद्ध धाम में वर्षभर श्रद्धालुओं का आवागमन रहता है, लेकिन त्योहारों और विशेष धार्मिक अवसरों पर यहां भक्तों की संख्या काफी बढ़ जाती है। दिवाली के बाद लाभ पंचमी का पर्व भी गुजरात में विशेष धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व रखता है। इस दिन बड़ी संख्या में लोग मंदिरों में दर्शन-पूजन करते हैं और नए कार्यों की शुरुआत को शुभ मानते हैं। ऐसे में अंबाजी मंदिर में भी श्रद्धालुओं की भारी भीड़ जुटने की संभावना है।

दिवाली की छुट्टियों के कारण पिछले कुछ दिनों से अंबाजी मंदिर में भक्तों की आवाजाही बढ़ी हुई है। दूर-दराज के क्षेत्रों से परिवारों के साथ श्रद्धालु मां अंबा के दर्शन के लिए पहुंच रहे हैं। लाभ पंचमी के दिन भी बड़ी संख्या में भक्तों के आने की संभावना को देखते हुए मंदिर प्रशासन और स्थानीय व्यवस्था पर अतिरिक्त दबाव रहने का अनुमान है। प्रधानमंत्री के आगमन पर सुरक्षा व्यवस्था के तहत कुछ मार्गों पर यातायात नियंत्रण, विशेष सुरक्षा इंतजाम और दर्शन व्यवस्था में बदलाव करना पड़ सकता था। इससे आम श्रद्धालुओं को प्रतीक्षा और आवागमन में परेशानी होने की आशंका थी। इसी स्थिति को ध्यान में रखते हुए प्रधानमंत्री के मंदिर दर्शन का कार्यक्रम रद्द करने का निर्णय लिया गया।

प्रधानमंत्री मोदी का अंबाजी मंदिर से धार्मिक और सांस्कृतिक जुड़ाव रहा है। उनके प्रस्तावित दर्शन कार्यक्रम को लेकर स्थानीय स्तर पर तैयारियां की जा रही थीं। हालांकि, त्योहार के अवसर पर मंदिर में उमड़ने वाली भीड़ को देखते हुए कार्यक्रम में बदलाव किया गया। इस निर्णय के बाद अब प्रधानमंत्री का गुजरात प्रवास मुख्य रूप से गांधीनगर केंद्रित रहेगा। अहमदाबाद पहुंचने के बाद उनका सीधे गांधीनगर जाना और वहां रात्रि विश्राम करना तय है। इसके बाद मुख्यमंत्री निवास पर राज्य मंत्रिमंडल और भाजपा के प्रमुख नेताओं के साथ रात्रिभोज होगा।

अंबाजी मंदिर में दर्शन का कार्यक्रम भले ही रद्द हो गया हो, लेकिन लाभ पंचमी के अवसर पर मंदिर में श्रद्धालुओं की आवाजाही और धार्मिक गतिविधियां जारी रहेंगी। मंदिर प्रशासन के सामने इस दौरान भक्तों को सुगम दर्शन कराने, भीड़ का प्रबंधन करने और सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेदारी होगी। प्रधानमंत्री के दौरे में बदलाव का उद्देश्य भी यही है कि त्योहार के दिन मंदिर पहुंचने वाले आम श्रद्धालुओं को दर्शन के लिए अनावश्यक परेशानी का सामना न करना पड़े।

चोरी के शक में दो दोस्तों को अगवा कर खंभे से बांधा, बेरहमी से पीटा, एक की मौत

सूरत। गुजरात के सूरत शहर में चोरी के संदेह ने एक युवक की जान ले ली। डिंडोली इलाके में दो दोस्तों को चोर समझकर छह लोगों ने कथित तौर पर उनका अपहरण कर लिया। इसके बाद दोनों को सुनसान स्थान पर ले जाकर पार्टी प्लॉट के डोम के खंभों से रस्सी के सहारे बांध दिया गया और लकड़ी के डंडों तथा बिजली के सर्विस वायर से बेरहमी से पिटाई की गई। इस हमले में गंभीर रूप से घायल अनिल भीखूभाई राठौड़ की मौत हो गई, जबकि उनका दोस्त नीलेश उर्फ गोपाल राठौड़ भी बुरी तरह घायल हुआ। घटना की जानकारी मिलने के बाद पुलिस ने हत्या और एट्रोसिटी एक्ट के तहत मामला दर्ज कर छह आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस के अनुसार, यह घटना 11 नवंबर 2026 की दोपहर की है। अनिल राठौड़ और उनका दोस्त नीलेश उर्फ गोपाल राठौड़ सणिया कणदे गांव स्थित कृष्णा सेवन स्टार पार्टी प्लॉट में घास काटने के लिए गए थे। दोनों अपने काम में लगे हुए थे, तभी वहां मौजूद कुछ लोगों को उन पर चोरी करने का संदेह हो गया। आरोप है कि बिना मामले की उचित जांच किए आरोपियों ने दोनों युवकों को चोर बताते हुए उनके साथ जातिसूचक गाली-गलौज शुरू कर दी। इसके बाद छह लोगों



ने मिलकर दोनों को जबरन अपने वाहन में बैठाया और उनका अपहरण कर लिया। आरोपी दोनों युवकों को सणिया कणदे गांव से कराडवा गांव स्थित राधेकृष्णा पार्टी प्लॉट ले गए। वहां पहुंचने के बाद उनके साथ मारपीट का सिलसिला और तेज हो गया। आरोप है कि दोनों को पार्टी प्लॉट में बने डोम के खंभों से रस्सी के सहारे बांध दिया गया, ताकि वे भाग न सकें। इसके बाद लकड़ी के डंडों और बिजली के सर्विस वायर से लगातार पिटाई की गई। दोनों युवकों को गंभीर चोटें आईं। मारपीट इतनी बर्बर थी कि अनिल भीखूभाई राठौड़ ने दम तोड़ दिया। उनके दोस्त नीलेश भी हमले में घायल हो गए।

चोरी के संदेह में दो युवकों को इस तरह बंधक बनाकर पीटने और एक की मौत होने की घटना सामने आने के बाद पुलिस ने मामले को गंभीरता से लिया। शिकायत के आधार पर डिंडोली पुलिस ने हत्या सहित संबंधित धाराओं और अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम (एट्रोसिटी एक्ट) के तहत प्राथमिकी दर्ज की। पुलिस ने आरोपियों की पहचान करने और उनकी गिरफ्तारी के लिए सर्विलांस टीम को सक्रिय किया। तकनीकी निगरानी तथा मुखबिरों से मिली सूचनाओं के आधार पर पुलिस ने कार्रवाई करते हुए घटना के कुछ ही घंटों के भीतर छह आरोपियों को पकड़ लिया।

गिरफ्तार किए गए आरोपियों की पहचान विजय उर्फ सोनू देवराज मौर्य, राहुल देवराज मौर्य, अभिषेक उर्फ अभि शिवकुमार मौर्य, सुमित शिवमूरत सिंह, सुजीत उमाशंकर यादव और महेंद्र उर्फ सोलू वीरेंद्र मौर्य के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपियों को हिरासत में लेकर घटना से जुड़े तथ्यों की जांच शुरू कर दी है। घटनास्थल से युवकों को बांधने में इस्तेमाल की गई रस्सी भी जब्त की गई है। पुलिस इस बात की भी पड़ताल कर रही है कि वारदात के दौरान किस आरोपी की क्या भूमिका रही और दोनों युवकों के साथ मारपीट किस तरह की गई।

सूरत के एसीपी ए.सी. तरडे ने बताया कि शुरुआती जांच में गिरफ्तार आरोपियों का कोई आपराधिक इतिहास सामने नहीं आया है। हालांकि, पुलिस सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर उनसे पूछताछ कर रही है। आरोपियों को अदालत में पेश कर पुलिस रिमांड हासिल करने की कार्रवाई की जाएगी, ताकि घटना की पूरी कड़ी और वारदात में शामिल प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका स्पष्ट हो सके।

इस घटना ने एक बार फिर कानून अपने हाथ में लेने की गंभीरता को उजागर किया है। किसी व्यक्ति पर चोरी का संदेह होने मात्र से उसे अपहरण कर बंधक बनाने या सजा देने का अधिकार किसी को नहीं है। ऐसे मामलों में शिकायत पुलिस को दी जानी चाहिए और जांच के बाद ही कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए। डिंडोली की इस घटना में एक युवक की जान चली गई, जबकि दूसरा घायल होकर हमले का शिकार बना। पुलिस अब गिरफ्तार आरोपियों से पूछताछ कर मामले के सभी पहलुओं की जांच में जुटी है।

चालक को आया अचानक हार्ट अटैक बेकाबू मिनी बस होटल में घुसी, मौत

धंधुका। गुजरात के अहमदाबाद जिले के धंधुका में एक दर्दनाक सड़क हादसे में मिनी बस चालक की जान चली गई। यात्रियों को लेकर जा रही मिनी बस के चालक को अचानक दिल का दौरा पड़ गया। तबीयत बिगड़ने से वह वाहन पर नियंत्रण खो बैठा और बस सड़क किनारे स्थित एक होटल में जा घुसी। हादसे के बाद मौके पर अफरातफरी मच गई। राहत की बात यह रही कि बस में सवार सभी दस यात्री सुरक्षित बच गए और कोई अन्य जनहानि नहीं हुई।

जानकारी के अनुसार, मिनी बस यात्रियों को लेकर अपने गंतव्य की ओर जा रही थी। रास्ते में धंधुका क्षेत्र के पास अचानक चालक की तबीयत बिगड़ गई। बताया जा रहा है कि उसे चलते वाहन में ही हार्ट अटैक आया। इसके चलते उसका बस पर नियंत्रण नहीं रहा और



वाहन अनियंत्रित होकर सड़क किनारे बने होटल की ओर बढ़ गया। इससे पहले कि चालक स्थिति संभाल पाता, मिनी बस होटल में जा घुसी। अचानक हुए इस घटनाक्रम से बस में बैठे यात्रियों में चीख-पुकार मच गई। बस के होटल में घुसने की आवाज सुनकर आसपास मौजूद लोग भी मौके पर पहुंच गए। हादसे के बाद यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकालने की कोशिश की गई। दुर्घटना में चालक की मौत हो गई, जबकि बस में सवार सभी दस यात्री सुरक्षित रहे। चालक की अचानक तबीयत बिगड़ने से हुआ यह हादसा एक बड़ी त्रासदी में बदल सकता था, लेकिन यात्रियों के सुरक्षित बच जाने से भारी जनहानि टल गई। घटना के बाद क्षेत्र में हादसे को लेकर चर्चा बनी रही।

खेलते-खेलते पानी से भरी बाल्टी में गिरा डेढ़ साल का मासूम, मौत से पसरा मातम

सूरत। शहर के भेस्तान इलाके में एक छोटी सी लापरवाही ने परिवार की खुशियां छीन लीं। घर में खेल रहा डेढ़ साल का मासूम सुप्रीत यादव अचानक पानी से भरी बाल्टी में गिर गया। पानी में डूबने से उसकी मौत हो गई। घटना की जानकारी मिलते ही परिवार में चीख-पुकार मच गई। जिस घर में कुछ देर पहले तक बच्चे की किलकारियां गूंज रही थीं, वहां देखते ही देखते मातम छा गया। मासूम की असमय मौत से परिजन गहरे सदमे में हैं।

जानकारी के अनुसार, सुप्रीत यादव घर में खेल रहा था। इसी दौरान खेलते-खेलते वह पानी से भरी बाल्टी के पास पहुंच गया और अचानक उसमें गिर पड़ा। बाल्टी में भरे पानी में डूबने के कारण वह बाहर नहीं निकल सका। जब तक परिवार के लोगों को घटना का पता चला, तब तक बहुत देर हो चुकी थी। डेढ़ साल के बच्चे की इस तरह मौत होने से परिजनों पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। परिवार के सदस्य इस हादसे से स्तब्ध हैं और घर में मातम पसरा हुआ है।

यह हादसा एक बार फिर छोटे बच्चों की सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े करता है। कम उम्र के बच्चे खतरे को समझ नहीं पाते और खेलते-खेलते ऐसी वस्तुओं तक पहुंच जाते हैं, जो उनके लिए जानलेवा साबित हो सकती हैं। घरों में पानी से भरी बाल्टियां, टब और अन्य बड़े बर्तन बच्चों की पहुंच में छोड़ना जोखिम भरा हो सकता है। विशेषकर छोटे बच्चों को पानी के आसपास अकेला नहीं छोड़ना चाहिए। बाल्टी या टब में थोड़ा पानी भी उनके लिए गंभीर खतरा बन सकता है। सुप्रीत की दर्दनाक मौत ने पूरे परिवार को गहरे सदमे में डाल दिया है।

त्योहारों की भीड़ के बीच यात्रियों को राहत, अहमदाबाद से मधुबनी के लिए 15 नवंबर को चलेगी वन-वे स्पेशल ट्रेन

अहमदाबाद। दीपावली और छठ पर्व के बाद त्योहारों के दौरान घर से वापस लौटने तथा अपने गंतव्य तक पहुंचने वाले यात्रियों की बढ़ती भीड़ को देखते हुए पश्चिम रेलवे ने विशेष रेल सेवा संचालित करने का निर्णय लिया है। यात्रियों की अतिरिक्त संख्या और उनकी सुविधा को ध्यान में रखते हुए अहमदाबाद से बिहार के मधुबनी के बीच 15 नवंबर 2026, रविवार को विशेष किराये पर वन-वे स्पेशल ट्रेन चलाई जाएगी। इस विशेष ट्रेन के संचालन से गुजरात से बिहार जाने वाले यात्रियों को अतिरिक्त यात्रा विकल्प मिलेगा और नियमित ट्रेनों में बढ़ते यात्री दबाव को कम करने में भी मदद मिलेगी। ट्रेन विभिन्न प्रमुख शहरों और जंक्शनों से होकर गुजरेगी, जिससे रास्ते में पड़ने वाले कई क्षेत्रों के यात्रियों को भी इसका लाभ मिल सकेगा।

पश्चिम रेलवे द्वारा जारी जानकारी के अनुसार, ट्रेन संख्या 09431 अहमदाबाद-मधुबनी वन-वे स्पेशल 15 नवंबर, रविवार को अहमदाबाद स्टेशन से सुबह 10:10 बजे रवाना होगी। यह ट्रेन निर्धारित मार्ग से होते हुए मंगलवार रात 1:40 बजे मधुबनी पहुंचेगी। लंबी दूरी की इस विशेष रेल सेवा को यात्रियों की जरूरतों को ध्यान में रखकर संचालित किया जा रहा है। त्योहारों के दौरान बिहार और उत्तर भारत के विभिन्न शहरों के लिए बड़ी संख्या में लोग गुजरात से यात्रा करते हैं। ऐसे में अतिरिक्त ट्रेन उपलब्ध होने से यात्रियों को यात्रा की योजना बनाने में सुविधा होगी।

अहमदाबाद से रवाना होने के बाद यह विशेष ट्रेन आणंद, छायापुरी, गोधरा, दाहोद और रतलाम स्टेशनों पर ठहराव करेगी। इसके बाद उज्जैन, सीहोर, संत हिरदाराम नगर, विदिशा और बीना होते हुए आगे बढ़ेगी। मध्य प्रदेश के विभिन्न प्रमुख रेल स्टेशनों से गुजरने के बाद ट्रेन दमोह, कटनी मुड़वारा, सतना और मानिकपुर में भी रुकेगी। इसके बाद उत्तर प्रदेश में प्रयागराज छिवकी और पंडित दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन से होते हुए बिहार में प्रवेश करेगी।

बिहार में ट्रेन बक्सर, आरा, दानापुर, पाटलिपुत्र, सोनपुर और हाजीपुर स्टेशनों पर ठहराव करेगी। इसके बाद मुजफ्फरपुर, समस्तीपुर, दरभंगा और सकरी होते हुए अपने अंतिम गंतव्य मधुबनी पहुंचेगी। इस तरह ट्रेन का मार्ग गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और बिहार के कई महत्वपूर्ण रेल स्टेशनों को जोड़ता है। इन स्टेशनों पर ठहराव होने से अलग-अलग क्षेत्रों के यात्रियों को भी इस सेवा का लाभ मिल सकेगा।

महिला पुलिस अधिकारियों द्वारा मीडियाकर्मियों के प्रति अनुचित व्यवहार: पुलिस के खिलाफ दबाव और आक्रामकता पर चर्चा

(निर्भीक, निष्पक्ष एवं तटस्थ छगनलाल मेवाड़ा) सूरत

एक चैनल के मीडियाकर्मी की महिला पुलिस इंस्पेक्टर ने उसे कमर से पकड़कर धक्का दे दिया। कैमरामैन किसी गुंडागर्दी के इरादे से नहीं गई थी, बल्कि रिपोर्टिंग और आधिकारिक जानकारी लेने गई थी। यह सिर्फ एक चैनल की बात नहीं है, यह तो रोज़ की बात है। पुरुष पुलिस अधिकारी तो मनमानी करते हैं, लेकिन अब तो महिला पुलिस अधिकारी भी किसी को धक्का दे सकती हैं।

महिलाओं का इतना आक्रामक होना शायद महिला सशक्तिकरण का एक बढ़ता हुआ उदाहरण है। पुलिस अधिकारियों को इस तरह व्यवहार करना सिखाया जाता है, जैसे कि उन्हें किसी को भी मनमाने ढंग से पीटने का लाइसेंस मिल गया हो, मुझे नहीं पता, लेकिन पुलिस का व्यवहार अशोभनीय नहीं होना चाहिए। यह सच है कि कानून व्यवस्था बनाए रखने में महिला पुलिसकर्मियों का योगदान कम महत्वपूर्ण नहीं है। यह भी सच है कि महिला पुलिस अधिकारियों ने अपनी एक अनूठी पहचान बनाई है। अगर ज्यादा नहीं तो, सेवानिवृत्त आईपीएस किरण बेदी को यहाँ याद किया जा सकता है।

यह भी सच है कि पुलिस को अपने वरिष्ठ अधिकारियों के दबाव का सामना करना पड़ता है, अफसोस! यहां तक कि शीर्ष पुलिस अधिकारी भी राजनीतिक और पेशेवर दबाव में काम करते हैं। यह स्वाभाविक है कि सार्वजनिक प्रदर्शनों के दौरान संयम बनाए रखना मुश्किल हो जाता है और पुलिस बेकाबू हो जाती है। उस समय, सामने कौन है यह दिखाई नहीं देता। बस यही देखना होता है कि स्थिति बेकाबू न हो जाए। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि पुलिसकर्मी भी जनता के हमलों का शिकार हो जाते हैं। ऐसे में, पुलिसकर्मियों के लिए अपनी सुरक्षा के लिए भी हिंसा करना अपरिहार्य हो जाता है।

अगर हम सिर्फ महिला पुलिस अधिकारियों की बात करें, तो उनकी जिम्मेदारियां कहीं अधिक हैं। पुलिस कर्तव्यों के अलावा, उन पर घर के काम और बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारियां भी स्थायी रूप से रहती हैं। इसलिए, आजकल हर जगह हिंसा का बोलबाला है। ऐसे में पुलिस इससे कैसे बच सकती है?

सीएजी की रिपोर्ट से पता चलता है: कर्मचारियों की कमी और व्यवस्था के कारण एसीबी लक्ष्य हासिल करने में विफल रही

(निडर, निष्पक्ष और तटस्थ छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत।

गुजरात में भ्रष्टाचार एक स्पष्ट और अमिट सच्चाई है। आज जिस तरह से लोगों की फाइलें सरकारी दफ्तरों में अटकी पड़ी हैं, उसे देखकर ऐसा लगता है मानो सरकार सबको मनचाहा खाने की छूट दे रही है। फिर सवाल उठता है कि क्यों, किसे और कितना खाने की छूट दी जा रही है? जो व्यक्ति पहले कभी यह कहने से नहीं थकता था कि वह खुद नहीं खाता और किसी को खाने नहीं देता, यह वाक्य उसने 2007 के विधानसभा चुनावों से पहले सार्वजनिक रूप से कहा था, अब वह गलती से भी यह वाक्य दोहराना नहीं चाहता। इसका कारण सीएजी रिपोर्ट है, जिसे सरकार ने अभी तक सार्वजनिक नहीं किया है। और यह रिपोर्ट आ भी सकती है या नहीं? जब सीएजी रिपोर्ट से भ्रष्टाचार साफ झलक रहा है, तो सरकार सीएजी रिपोर्ट प्रकाशित करने की गलती क्यों करेगी?

यहां यह उल्लेख करना आवश्यक है कि राज्य सरकार के गृह विभाग ने अक्टूबर 2013 में निर्देश दिया था कि भ्रष्टाचार विरोधी ब्यूरो को हर साल अपने काम में 20 प्रतिशत की वृद्धि करनी चाहिए, लेकिन 2007 से 2011 के बीच भ्रष्टाचार के मामलों की जांच में उपलब्धि हमेशा लक्ष्य से कम रही। इन वर्षों के दौरान, उपलब्धि में 32 से 58 प्रतिशत की गिरावट आई है। इस कार्यालय द्वारा यह काम न कर पाने का कारण यह बताया गया कि इस कार्यालय के कर्मचारी पुलिस तैनाती में लगे रहते हैं। 2009 से 2011 के दौरान, भ्रष्टाचार विरोधी ब्यूरो के पुलिस निरीक्षकों के 2303 कार्यदिवस और कांस्टेबलों के 2150 कार्यदिवस पुलिस तैनाती में लगे रहे।

भ्रष्टाचार-विरोधी ब्यूरो में 37 पद रिक्त थे। कर्मचारियों की कमी के संबंध में ब्यूरो द्वारा बार-बार शिकायतें दर्ज कराने के बावजूद, इन रिक्त पदों को भरने के लिए कोई कदम नहीं उठाया गया। यद्यपि इस ब्यूरो का कार्यक्षेत्र पुलिस प्रशासन से अलग था, फिर भी इसके निरीक्षकों को पुलिस का कार्यभार सौंपा गया था और पुलिस का ही इस ब्यूरो पर नियंत्रण बना रहा। इसी कारण भ्रष्टाचार-विरोधी ब्यूरो अपने उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर सका, जैसा कि उस समय की सीएजी रिपोर्ट में उल्लेख किया गया था।

मतदान के अधिकारों की रक्षा करने और लोकतंत्र में विश्वास बनाए रखने के लिए सर्वोच्च न्यायालय द्वारा ठोस कार्रवाई आवश्यक है

(निडर, निष्पक्ष और तटस्थ छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत

लोकतंत्र तभी तक जीवित है जब तक नागरिकों के मतदान के अधिकार की हर परिस्थिति में रक्षा की जाती है। लेकिन ऐसा लगता है कि सरकार ने मान लिया है कि एसआईआर आंदोलन के खिलाफ प्रदर्शन कर रही विपक्षी पार्टियां पुलिस द्वारा खड़ी की जा रही भारी बाधाओं और उनकी मांगों को पूरी तरह से नजरअंदाज किए जाने से तंग आकर शांत हो जाएंगी। हालांकि, विपक्ष द्वारा विभिन्न रूपों में विरोध प्रदर्शन जारी रखने के संकेत यह स्पष्ट करते हैं कि जनता में असंतोष जरा भी कम नहीं हुआ है।

इसका प्रमाण इस तथ्य से भी मिलता है कि जब लोगों ने एसआईआर को रद्द करने और मुख्य चुनाव आयुक्त के इस्तीफे की मांग करते हुए विरोध प्रदर्शन किया, तब भी सरकार ने उदासीनता का रवैया अपनाया। इन सभी परिस्थितियों में, लोकतंत्र में जनता का विश्वास बरकरार रखने के लिए यह आवश्यक है कि सर्वो

विरासत की पहचान से विकास की नई पटरी पर वडनगर, अंबाजी तक रेल पहुंचाने की तैयारी तेज

अहमदाबाद। गुजरात का ऐतिहासिक शहर वडनगर अब अपनी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत के साथ आधुनिक रेल कनेक्टिविटी और पर्यटन विकास की नई पहचान बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। कभी अपनी ऐतिहासिक धरोहरों और सांस्कृतिक परंपराओं के लिए प्रसिद्ध रहा वडनगर अब उत्तर गुजरात के धार्मिक, ऐतिहासिक और पर्यटन स्थलों को रेल नेटवर्क से जोड़ने की बड़ी योजना का महत्वपूर्ण केंद्र बन रहा है। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल ने यहां यात्री सुविधाओं के विस्तार के साथ रेल संपर्क को मजबूत करने की दिशा में कई कदम उठाए हैं। इसका असर हाल ही में आयोजित स्वदेशी मेले के दौरान भी देखने को मिला, जब 30 अक्टूबर से 8 नवंबर 2026 तक करीब 6,000 यात्रियों ने वडनगर स्टेशन से रेल यात्रा की। यह आंकड़ा बताता है कि स्थानीय आयोजनों, पर्यटन और क्षेत्रीय गतिविधियों को बढ़ावा देने में रेल परिवहन की भूमिका लगातार महत्वपूर्ण होती जा रही है। आने वाले समय में तारंगाहिल-अंबाजी-आबू रोड नई रेल लाइन और वरेठा से अंबाजी तक रेल संपर्क की योजना इस पूरे क्षेत्र के विकास को नई गति दे सकती है।

वडनगर में आयोजित स्वदेशी मेला-2026 केवल खरीदारी और मनोरंजन का आयोजन नहीं था, बल्कि इसने स्थानीय उत्पादों, ग्रामीण उद्यमिता, हस्तशिल्प और हथकरघा को भी एक बड़ा मंच प्रदान किया। मेले में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ ग्रामीण महिला उद्यमियों द्वारा तैयार उत्पादों और स्थानीय कारीगरों के हुनर को प्रदर्शित किया गया। बड़ी संख्या में लोगों के पहुंचने से आसपास के व्यापारिक प्रतिष्ठानों और स्थानीय गतिविधियों को भी प्रोत्साहन मिला। इस आयोजन में करीब 6,000 यात्रियों ने वडनगर रेलवे स्टेशन से रेल यात्रा की। इससे स्पष्ट हुआ कि बेहतर रेल सुविधा उपलब्ध होने पर धार्मिक, सांस्कृतिक और व्यावसायिक आयोजनों में लोगों की भागीदारी बढ़ सकती है। रेलवे के लिए भी ऐसे आयोजन किसी क्षेत्र की यात्री मांग और पर्यटन संभावनाओं को समझने का अवसर बनते हैं। वडनगर रेलवे स्टेशन महेसाणा-वरेठा ब्रॉडगेज रेल लाइन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस रेलखंड के विकास ने उत्तर गुजरात के कई क्षेत्रों को बेहतर रेल संपर्क उपलब्ध कराया है। वर्ष 2021 में महेसाणा-वरेठा के 55 किलोमीटर लंबे रेलखंड का आमान परिवर्तन पूरा किया गया था। इस कार्य पर 293.14 करोड़ रुपये खर्च हुए, जबकि विद्युतीकरण के लिए 74.66 करोड़ रुपये की लागत आई। इस प्रकार पूरी परियोजना पर कुल 367.80 करोड़ रुपये का निवेश किया गया। इस रेलखंड पर कुल 10 स्टेशन हैं। इनमें वडनगर, विसनगर, खेरालू और वरेठा के स्टेशन भवनों का नए सिरे से निर्माण किया गया है। महेसाणा के माध्यम से यह रेल लाइन अहमदाबाद-दिल्ली ब्रॉडगेज नेटवर्क से जुड़ती है, जिससे यात्रियों को देश के प्रमुख रेल मार्गों तक पहुंचने की सुविधा मिलती है।



वर्तमान में वडनगर से तीन जोड़ी ट्रेनें संचालित हो रही हैं। इनमें वरेठा-गांधीनगर कैपिटल मेमू (69208/69207), वडनगर-वलसाड सुपरफास्ट एक्सप्रेस (20960/20959) और वडनगर-बांद्रा टर्मिनस लोकशक्ति एक्सप्रेस (19018/19017) शामिल हैं। इन ट्रेनों के माध्यम से स्थानीय यात्रियों को गांधीनगर, वलसाड और मुंबई सहित विभिन्न क्षेत्रों तक आवागमन की सुविधा मिलती है। रेल संपर्क मजबूत होने से विद्यार्थियों, नौकरीपेशा लोगों, व्यापारियों और पर्यटकों को लाभ मिल रहा है। आने वाले समय में नई रेल परियोजनाओं के पूरा होने पर इस क्षेत्र की कनेक्टिविटी और व्यापक होने की उम्मीद है।

वडनगर स्टेशन की बनावट भी इसकी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान को ध्यान में रखकर तैयार की गई है। स्टेशन भवन में पत्थर की आकर्षक नक्काशी, विशिष्ट प्रवेश और निकास द्वार तथा सुव्यवस्थित हरियाली इसे सामान्य रेलवे स्टेशनों से अलग पहचान देते हैं। यहां आधुनिक यात्री सुविधाओं के साथ स्थानीय स्थापत्य और विरासत की झलक भी देखने को मिलती है। स्टेशन पर 425 मीटर लंबे दो प्लेटफॉर्म बनाए गए हैं। यात्रियों की आवाजाही को सुविधाजनक बनाने के लिए फुट ओवर ब्रिज और लिफ्ट की व्यवस्था की गई है। इसके अलावा कैफे सहित प्रतीक्षालय, सामान्य यात्रियों और महिला यात्रियों के लिए अलग-अलग वेटिंग रूम, शौचालय तथा पेयजल की सुविधा उपलब्ध कराई गई है।

प्लेटफॉर्म नंबर एक पर 529.20 वर्ग मीटर क्षेत्र में कवर शेड बनाया गया है, जिससे यात्रियों को धूप और बारिश से राहत मिलती है। दिव्यांग यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए रैंप, विशेष शौचालय और अन्य जरूरी व्यवस्थाएं भी की गई हैं। रेलवे का उद्देश्य स्टेशन को केवल रेल यात्रा का केंद्र बनाना नहीं, बल्कि क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान और पर्यटन गतिविधियों के अनुरूप विकसित करना भी है। वडनगर-मोढेरा-पाटन हेरिटेज सर्किट से इसकी कनेक्टिविटी इस दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जा रही है। इस सर्किट में ऐतिहासिक स्मारकों, स्थापत्य कला और सांस्कृतिक धरोहरों को देखने के लिए देश-विदेश से पर्यटक पहुंचते हैं। बेहतर रेल सुविधा मिलने से इन पर्यटन स्थलों तक पहुंचना अधिक आसान हो सकता है।

वडनगर और आसपास के इलाकों के लिए सबसे बड़ी संभावनाओं में तारंगाहिल-अंबाजी-आबू रोड नई रेल लाइन शामिल है। करीब 117 किलोमीटर लंबी इस परियोजना को वर्ष 2022-23 में लगभग 3,000 करोड़ रुपये की लागत से मंजूरी दी गई थी। बाद में इसकी संशोधित कुल लागत करीब 3,050 करोड़ रुपये निर्धारित की गई। इस रेल लाइन के निर्माण से उत्तर गुजरात के पहाड़ी और धार्मिक क्षेत्रों को सीधे रेल नेटवर्क से जोड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति होगी। इसके साथ ही वरेठा से अंबाजी तक प्रस्तावित रेल संपर्क भी क्षेत्रीय कनेक्टिविटी के विस्तार की योजना का हिस्सा है। इससे वडनगर और आसपास के क्षेत्रों को अंबाजी जैसे प्रमुख धार्मिक स्थल तक रेल मार्ग से पहुंचने का बेहतर विकल्प मिल सकता है।

इस नई रेल लाइन का महत्व केवल यातायात सुविधा तक सीमित नहीं है। इसके पूरा होने पर अंबाजी के प्रसिद्ध शक्तिपीठ, तारंगाहिल के जैन तीर्थ, राजस्थान के माउंट आबू और दिलवाड़ा जैन मंदिर जैसे प्रमुख धार्मिक एवं पर्यटन स्थलों को रेल नेटवर्क से जोड़ने में मदद मिलेगी। अभी इन क्षेत्रों तक पहुंचने के लिए यात्रियों को सड़क परिवहन पर काफी निर्भर रहना पड़ता है। रेल संपर्क विकसित होने से श्रद्धालुओं और पर्यटकों को यात्रा के अधिक सुविधाजनक विकल्प मिलेंगे। विशेष रूप से धार्मिक पर्वों, मेलों और छुट्टियों के दौरान यात्रियों की बढ़ती संख्या को संभालने में रेल परिवहन उपयोगी साबित हो सकता है। इसके अलावा यह लाइन अहमदाबाद-आबू रोड रेल मार्ग के लिए वैकल्पिक रास्ते के रूप में भी काम कर सकती है, जिससे क्षेत्रीय यातायात और माल ढुलाई को मजबूती मिलने की संभावना है।

परियोजना का निर्माण कार्य तकनीकी और भौगोलिक दृष्टि से चुनौतीपूर्ण है। प्रस्तावित रेल लाइन दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों से होकर गुजरेगी, इसलिए इसमें कई बड़े इंजीनियरिंग कार्य शामिल हैं। योजना के तहत कुल 15 स्टेशन बनाए जाने हैं, जिनमें आठ क्रॉसिंग स्टेशन और सात हॉल्ट स्टेशन होंगे। पूरी तरह विद्युतीकृत इस रेल लाइन पर 11 सुरंगों का निर्माण प्रस्तावित है। इसके साथ ही 54 बड़े पुल, 151 छोटे पुल, आठ रोड ओवर ब्रिज और 54 रोड अंडर ब्रिज अथवा सीमित ऊंचाई वाले पुल बनाए जाने हैं। इन निर्माण कार्यों का उद्देश्य पहाड़ी और कठिन भूभाग में सुरक्षित तथा सुगम रेल संचालन सुनिश्चित करना है। रेलवे के अनुसार, परियोजना के लिए भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। निविदा प्रक्रिया के बाद निर्माण कार्यों के ठेके भी दिए जा चुके हैं और अलग-अलग हिस्सों में काम आगे बढ़ रहा है। निर्धारित समयसीमा के भीतर परियोजना पूरी करने के लिए निर्माण गतिविधियों की लगातार निगरानी की जा रही है। सुरंगों, पुलों और अन्य तकनीकी संरचनाओं के निर्माण में विशेष सावधानी बरती जा रही है, ताकि भविष्य में इस मार्ग पर यात्री और मालगाड़ियों का संचालन सुरक्षित तरीके से किया जा सके। इस रेल परियोजना से उत्तर गुजरात के आर्थिक और सामाजिक विकास को भी गति मिलने की उम्मीद है। अंबाजी और तारंगाहिल जैसे धार्मिक स्थलों तक रेल पहुंचने से श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ सकती है। पर्यटन गतिविधियों के विस्तार से होटल, परिवहन, भोजनालय, स्थानीय बाजार और छोटे कारोबारों को नए अवसर मिलेंगे। स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा होने की संभावना है। वहीं, किसानों को अपने उत्पाद बड़े बाजारों तक पहुंचाने में मदद मिल सकती है। हस्तशिल्प, हथकरघा, लघु उद्योग और ग्रामीण महिला उद्यमियों के उत्पादों को भी नए ग्राहक और बाजार मिल सकते हैं।

जलरंगों में उतर आई प्रकृति की खूबसूरती, बांद्रा में 'इकोज ऑफ अर्थ' प्रदर्शनी का आगाज

मुंबई। प्रकृति के बदलते रंग, धरती के मनमोहक दृश्य और पर्यावरण की अनूठी सुंदरता जब कलाकार की कल्पना और जलरंगों के स्पर्श से कैनवास पर उतरती है, तो कला का एक अलग ही संसार आकार लेता है। इसी कलात्मक अनुभूति को दर्शकों तक पहुंचाने के उद्देश्य से मुंबई के बांद्रा रिक्लेमेशन स्थित द बॉम्बे आर्ट सोसाइटी में चित्रकार राजेंद्र चौहान की जलरंग चित्र प्रदर्शनी 'इकोज ऑफ अर्थ' का शुक्रवार, 13 नवंबर 2026 को शुभारंभ हुआ। प्रदर्शनी में कलाकार की बनाई आकर्षक कलाकृतियां प्रदर्शित की गई हैं, जिनमें प्रकृति के विविध रूपों, प्राकृतिक परिदृश्यों और पर्यावरण की बारीकियों को जलरंगों के माध्यम से जीवंत रूप दिया गया है। यह आयोजन कला प्रेमियों के साथ विद्यार्थियों, उभरते चित्रकारों और प्रकृति से जुड़ाव रखने वाले लोगों को रंगों के जरिए धरती की सुंदरता को नए नजरिए से देखने का अवसर प्रदान कर रहा है। प्रदर्शनी 19 नवंबर तक आम लोगों के लिए खुली रहेगी। चित्रकार राजेंद्र चौहान ने अपनी कलाकृतियों में प्रकृति को केवल दृश्य के रूप में प्रस्तुत करने के बजाय उसके भीतर छिपे भाव, सौंदर्य और परिवर्तन को भी अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है।



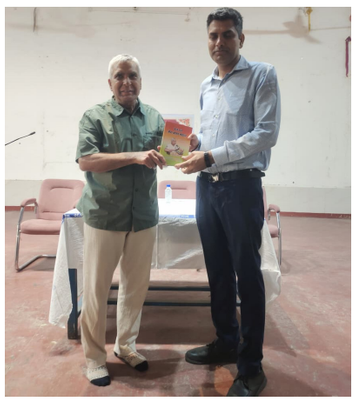
उनकी पेंटिंग्स में प्राकृतिक दृश्यों के अलग-अलग रंग, रोशनी और वातावरण के बदलते प्रभाव दिखाई देते हैं। जलरंगों की पारदर्शिता और रंगों के सहज मेल के माध्यम से उन्होंने प्रकृति की कोमलता, विस्तार और जीवंतता को कैनवास पर उकेरा है। कहीं प्राकृतिक दृश्य शांत वातावरण का एहसास कराते हैं तो कहीं रंगों का संयोजन प्रकृति के गतिशील स्वरूप को सामने लाता है। प्रदर्शनी का शीर्षक 'इकोज ऑफ अर्थ' भी धरती की उन अनकही अभिव्यक्तियों की ओर संकेत करता है, जिन्हें कलाकार अपनी कल्पना और रंगों के माध्यम से महसूस करने तथा दिखाने की कोशिश करता है।

राजेंद्र चौहान फाइन आर्ट्स के पूर्व विद्यार्थी हैं और वर्तमान में गुजरात के मोरबी स्थित न्यू एरा ग्लोबल स्कूल में कला शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। कला के प्रति उनकी रुचि और प्रकृति के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण उनकी पेंटिंग्स में दिखाई देता है। एक शिक्षक के रूप में वे कला को अभिव्यक्ति और रचनात्मक सोच का माध्यम मानते हैं। उनकी इस प्रदर्शनी में जलरंग माध्यम का विशेष महत्व है, क्योंकि इसमें रंगों की पारदर्शिता, पानी का प्रवाह और ब्रश के सहज प्रयोग से दृश्य को स्वाभाविक रूप दिया जाता है। कलाकार ने इसी माध्यम की संभावनाओं का उपयोग करते हुए प्रकृति के विविध रंगों और उसकी सूक्ष्म विशेषताओं को प्रस्तुत किया है। प्रदर्शनी का उद्घाटन शुक्रवार शाम चार बजे किया गया। इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में विले पार्ले पूर्व स्थित साठ्ये कॉलेज के भूगोल विभाग की सेवानिवृत्त व्याख्याता, विश्व भ्रमणकर्ता और यात्रा लेखिका लीना सताम तथा मुंबई रेलवे विकास निगम लिमिटेड (एमआरवीसी) के मुख्य प्रबंधक (कॉरपोरेट समन्वय) सुनील जी. उदासी उपस्थित रहे। दोनों विशिष्ट अतिथियों की मौजूदगी ने आयोजन को विशेष महत्व प्रदान किया। कला और भूगोल के बीच प्रकृति एक महत्वपूर्ण साझा विषय है। ऐसे में इस प्रदर्शनी के माध्यम से प्राकृतिक दृश्यों को कलात्मक दृष्टि से देखने और समझने का अवसर भी सामने आया।

इस प्रदर्शनी को गुजरात राज्य ललित कला अकादमी ने प्रायोजित किया है। आयोजकों के अनुसार, अकादमी का यह सहयोग राज्य में कला और दृश्य कलाओं को प्रोत्साहित करने के साथ कलाकारों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा प्रदर्शित करने के अवसर उपलब्ध कराने की दिशा में महत्वपूर्ण है। इस तरह के आयोजन कलाकारों को व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुंचने का मंच देते हैं। साथ ही कला के विद्यार्थियों और नए कलाकारों को स्थापित रचनात्मक कार्यों को करीब से देखने तथा उनसे प्रेरणा लेने का अवसर भी मिलता है। 'इकोज ऑफ अर्थ' प्रदर्शनी 13 से 19 नवंबर 2026 तक द बॉम्बे आर्ट सोसाइटी, बांद्रा रिक्लेमेशन, मुंबई में दर्शकों के लिए खुली रहेगी। 13 नवंबर को प्रदर्शनी शाम चार बजे से सात बजे तक देखी जा सकेगी, जबकि 14 से 19 नवंबर तक प्रतिदिन सुबह 11 बजे से शाम सात बजे तक दर्शक कलाकृतियों का अवलोकन कर सकेंगे। कला प्रेमियों, विद्यार्थियों, कलाकारों और मुंबई के नागरिकों के लिए यह प्रदर्शनी जलरंग चित्रकला की खूबसूरती को करीब से अनुभव करने का अवसर है।

शिफ्ट ड्यूटी के तनाव से बचने के लिए रेलकर्मियों को दिए स्वास्थ्य मंत्र

भुसावल। रेल कर्मचारियों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने तथा उन्हें तनावमुक्त जीवनशैली अपनाने के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से 13 नवंबर को कृष्णचंद्र सभागार में विशेष स्वास्थ्य कार्यशाला का आयोजन किया गया। कर्मचारी लाभ निधि के अंतर्गत आयोजित इस कार्यशाला में विशेषज्ञ ने रेलकर्मियों को स्वस्थ रहने, मानसिक तनाव से बचने और व्यस्त दिनचर्या के बीच भी अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखने के व्यावहारिक उपाय बताए। कार्यशाला में इस बात पर विशेष जोर दिया गया कि बेहतर स्वास्थ्य केवल व्यक्तिगत जीवन को ही खुशहाल नहीं बनाता, बल्कि कार्यक्षमता और कार्य के प्रति एकाग्रता बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रेलवे में कर्मचारियों की कार्यप्रणाली अन्य कई विभागों से अलग होती है। रेल परिचालन और यात्रियों की सुविधाओं को सुचारु बनाए रखने के लिए कर्मचारियों को दिन-रात अलग-अलग पालियों में ड्यूटी करनी पड़ती है। कई बार अनियमित समय-सारणी, लगातार काम और पर्याप्त आराम नहीं मिल पाने के कारण उनके



शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। इसी चुनौती को ध्यान में रखते हुए भुसावल मंडल में इस कार्यशाला का आयोजन किया गया, ताकि कर्मचारी अपनी दिनचर्या में छोटे-छोटे बदलाव करके स्वस्थ और संतुलित जीवन जी सकें।

कार्यशाला में विशेषज्ञ श्री अरुण ऋषि ने कर्मचारियों को संबोधित करते हुए दैनिक जीवन में अपनाई जा सकने वाली सरल स्वास्थ्य तकनीकों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि नियमित दिनचर्या, संतुलित जीवनशैली और सकारात्मक सोच के माध्यम से तनाव को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। व्यस्त कार्यशैली के बावजूद व्यक्ति को अपने शरीर और मन की जरूरतों को समझना चाहिए तथा स्वास्थ्य को प्राथमिकता देनी चाहिए। उन्होंने कर्मचारियों को ऐसे उपाय अपनाने की सलाह दी, जिनसे काम के दबाव के बीच भी मानसिक शांति और शारीरिक सक्रियता बनाए रखी जा सके।

विशेषज्ञ ने इस बात पर भी ध्यान दिलाया कि लंबे समय तक काम करने और अलग-अलग शिफ्टों में ड्यूटी करने वाले कर्मचारियों के लिए स्वास्थ्य के प्रति सजग रहना बेहद जरूरी है। छोटी-छोटी अच्छी आदतें जीवन में बड़ा बदलाव ला सकती हैं। कार्यशाला के दौरान कर्मचारियों को प्रतिकूल परिस्थितियों में भी खुद को संतुलित रखने, तनाव से बचने और जीवन में प्रसन्नता बनाए रखने के महत्व से अवगत कराया गया।

कार्यक्रम का आयोजन मंडल रेल प्रबंधक पुनीत अग्रवाल के नेतृत्व में किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता अपर मंडल रेल प्रबंधक (प्रशासन) प्रवीण कुमार पाठक ने की। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि कर्मचारियों के स्वास्थ्य और कल्याण से जुड़े ऐसे कार्यक्रम अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। रेलवे की जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए कर्मचारियों को कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे में उन्हें शारीरिक रूप से स्वस्थ और मानसिक रूप से मजबूत बनाए रखने के लिए समय-समय पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।

कार्यक्रम के आयोजन में वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी दिलीप आर. खरात ने कार्मिक विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों के सहयोग से विशेष योगदान दिया। कार्यशाला के माध्यम से रेलकर्मियों को यह संदेश दिया गया कि काम की व्यस्तता के बीच अपने स्वास्थ्य की अनदेखी नहीं करनी चाहिए। स्वस्थ शरीर, शांत मन और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ ही व्यक्ति अपने दायित्वों का बेहतर ढंग से निर्वहन कर सकता है।

पेंशन संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए 15 दिसंबर को लगेगी रेलवे की पेंशन अदालत

अहमदाबाद। सेवानिवृत्ति के बाद पेंशन और पारिवारिक पेंशन से जुड़ी छोटी-बड़ी परेशानियों के समाधान के लिए रेलवे ने रिटायर कर्मचारियों को अपनी बात सीधे अधिकारियों के सामने रखने का अवसर देने की पहल की है। इसी क्रम में पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल में आगामी 15 दिसंबर 2026, मंगलवार को पेंशन अदालत का आयोजन किया जाएगा। रेलवे बोर्ड के निर्देश पर आयोजित होने वाली इस अदालत में पेंशन से संबंधित लंबित शिकायतों और समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर सुना जाएगा तथा उनका मौके पर ही निपटारा करने का प्रयास किया जाएगा। इसका उद्देश्य सेवानिवृत्त रेलकर्मियों और उनके परिवारों को कार्यालयों के चक्कर लगाने से राहत दिलाना तथा पेंशन संबंधी मामलों का समयबद्ध समाधान सुनिश्चित करना है। यह आयोजन अहमदाबाद स्थित मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में होगा।

रेलवे प्रशासन के अनुसार, पेंशन अदालत में अहमदाबाद मंडल से सेवानिवृत्त हुए सभी कर्मचारी अपनी शिकायतें प्रस्तुत कर सकेंगे। इसमें नियमित पेंशन प्राप्त करने वाले पेंशनरों के साथ-साथ पारिवारिक पेंशन पाने वाले फैमिली पेंशनरों को भी शामिल किया गया है। कई बार सेवानिवृत्ति के बाद पेंशन भुगतान, बकाया राशि, पेंशन निर्धारण, दस्तावेजों में त्रुटि या अन्य प्रशासनिक कारणों से पेंशनरों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। ऐसी शिकायतों के समाधान के लिए पेंशन अदालत एक सीधा मंच उपलब्ध कराएगी,



जहां संबंधित मामलों को अधिकारियों के समक्ष रखा जा सकेगा।

अहमदाबाद मंडल के वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी सिद्धार्थ ने बताया कि इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य सेवानिवृत्त कर्मचारियों और उनके परिवारों की पेंशन से जुड़ी समस्याओं को सुनना और उनका जल्द समाधान करना है। पेंशनर तथा फैमिली पेंशनर अपनी शिकायतों का विवरण निर्धारित प्रारूप और आवश्यक दस्तावेजों के साथ भेज सकते हैं। प्राप्त आवेदनों के आधार पर संबंधित मामलों की जांच की जाएगी, ताकि पेंशन अदालत के दौरान शिकायतों पर उचित कार्रवाई की जा सके।

रेलवे ने पेंशन अदालत में शिकायत रखने के इच्छुक पेंशनरों के लिए आवेदन भेजने की अंतिम तारीख 17 नवंबर 2026 निर्धारित की है। आवेदकों को अपना आवेदन तीन प्रतियों में तैयार कर निर्धारित पते पर भेजना होगा। आवेदन मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय (स्थापना), अहमदाबाद मंडल, पश्चिम रेलवे, जीसीएस हॉस्पिटल के सामने, अमदुपुरा, अहमदाबाद के पते पर भेजा जा सकता है। निर्धारित समयसीमा के भीतर आवेदन पहुंचाना जरूरी होगा, ताकि संबंधित शिकायतों को दर्ज कर उनकी जांच और आवश्यक तैयारी की जा सके।

आवेदन में पेंशनर को अपनी पूरी जानकारी स्पष्ट रूप से देनी होगी। इसमें नाम, पदनाम, अंतिम वेतन, रेलवे में भर्ती होने की तारीख और सेवानिवृत्ति की तारीख का उल्लेख करना अनिवार्य है। इसके साथ ही पेंशन भुगतान आदेश यानी पीपीओ की प्रति भी संलग्न करनी होगी। आवेदक को अपनी शिकायत का स्पष्ट विवरण देना होगा, ताकि रेलवे अधिकारियों को समस्या की प्रकृति समझने और संबंधित रिकॉर्ड की जांच करने में आसानी हो। अधूरे आवेदन या आवश्यक दस्तावेजों के अभाव में शिकायत के निस्तारण में परेशानी हो सकती है, इसलिए सभी जानकारियां सावधानीपूर्वक भरने की आवश्यकता है।

जो पेंशनर डाक के माध्यम से आवेदन नहीं भेजना चाहते, उनके लिए ईमेल से शिकायत दर्ज कराने की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है। ऐसे आवेदक अपनी अर्जी और जरूरी दस्तावेज pensionadalat2020adi@gmail.com पर भेज सकते हैं। ईमेल के माध्यम से आवेदन करने वालों को भी निर्धारित विवरण और पीपीओ की प्रति उपलब्ध करानी होगी, ताकि उनकी शिकायत को संबंधित रिकॉर्ड के साथ दर्ज किया जा सके।

रेलवे की पेंशन अदालत उन सेवानिवृत्त कर्मचारियों और उनके परिजनों के लिए उपयोगी साबित हो सकती है, जिन्हें लंबे समय से पेंशन संबंधी समस्याओं के समाधान का इंतजार है। इस पहल के माध्यम से रेलवे प्रशासन और पेंशनरों के बीच सीधा संवाद स्थापित होगा। शिकायतों को एक स्थान पर सुनने और संबंधित अधिकारियों के समक्ष रखने से मामलों के निस्तारण की प्रक्रिया में तेजी आने की उम्मीद है। अहमदाबाद मंडल ने पात्र पेंशनरों और फैमिली पेंशनरों से अपील की है कि वे 17 नवंबर तक अपना आवेदन निर्धारित पते या ईमेल पर भेज दें, ताकि 15 दिसंबर को आयोजित होने वाली पेंशन अदालत में उनकी शिकायतों पर विचार किया जा सके।

डोसे की चटनी में मिला कॉकरोच, जामनगर के मशहूर बजरंग डोसा पर तीन दिन की बंदी

जामनगर। गुजरात के जामनगर में खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता और रेस्तरां की स्वच्छता को लेकर गंभीर मामला सामने आया है। शहर की पटेल कॉलोनी स्थित मशहूर बजरंग डोसा में एक ग्राहक को परोसी गई डोसे की चटनी में कॉकरोच मिलने से हड़कंप मच गया। परिवार के साथ भोजन करने पहुंचे ग्राहक डॉ. भावेश व्यास ने जब चटनी में तिलचट्टा देखा तो उन्होंने इसकी शिकायत की और दुकानदार के कथित असभ्य व्यवहार पर नाराजगी भी जताई। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद खाद्य एवं औषधि विभाग हरकत में आया और तत्काल जांच के लिए टीम को रेस्तरां भेजा गया। अधिकारियों ने दुकान में खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता, रखरखाव और साफ-सफाई का निरीक्षण किया। जांच के दौरान मौके पर कीट-पतंगे तो नहीं मिले, लेकिन दुकान में स्वच्छता की कमी स्पष्ट रूप से दिखाई दी। खाद्य सुरक्षा मानकों का पालन नहीं किए जाने पर विभाग ने बजरंग डोसा को तीन दिनों के लिए बंद करने का आदेश जारी कर दिया। इस अवधि में दुकान पर किसी भी प्रकार की बिक्री नहीं की जा सकेगी।

जानकारी के अनुसार, यह घटना जामनगर की पटेल कॉलोनी स्थित बजरंग डोसा में हुई। यह दुकान शहर में डोसे के लिए जानी जाती है और यहां बड़ी संख्या में ग्राहक



भोजन करने पहुंचते हैं। बताया गया कि डॉ. भावेश व्यास अपने परिवार के साथ यहां भोजन करने गए थे। उन्होंने डोसा मंगाया और उसके साथ परोसी गई चटनी खाना शुरू किया। इसी दौरान उनकी नजर चटनी में मौजूद एक कॉकरोच पर पड़ी। खाने की वस्तु में कीड़ा दिखाई देने से परिवार के लोग हैरान रह गए। जिस भोजन को वे स्वाद लेकर खाने पहुंचे थे, उसी में इस तरह की गंदगी मिलने से उनका अनुभव बेहद खराब हो गया।

ग्राहक ने इस मामले को लेकर रेस्तरां संचालक के सामने आपत्ति जताई। उनका आरोप है कि शिकायत करने पर दुकानदार का व्यवहार भी संतोषजनक नहीं रहा और उसने असभ्य तरीके से प्रतिक्रिया दी। खाद्य पदार्थ में कीड़ा मिलने के बाद ग्राहक की नाराजगी स्वाभाविक थी, क्योंकि बाहर भोजन करने वाले लोग इस भरोसे के साथ किसी रेस्तरां में जाते हैं कि उन्हें साफ-सुथरा और सुरक्षित खाना मिलेगा। ग्राहक और दुकानदार के बीच हुई इस घटना के बाद मामले का वीडियो सामने आया, जो देखते ही देखते सोशल मीडिया पर प्रसारित होने लगा। वीडियो वायरल होने के बाद शहर में रेस्तरां की साफ-सफाई और खाद्य सुरक्षा को लेकर चर्चा तेज हो गई।

मामले की गंभीरता को देखते हुए खाद्य विभाग की टीम ने बजरंग डोसा पहुंचकर निरीक्षण किया। अधिकारियों ने दुकान में रखी खाद्य सामग्री, भोजन तैयार करने की जगह, रसोई की स्थिति और साफ-सफाई का जायजा लिया। जांच का उद्देश्य यह पता लगाना था कि खाद्य पदार्थों को किस तरह रखा जा रहा है और भोजन तैयार करने के दौरान निर्धारित स्वच्छता नियमों का पालन किया जा रहा है या नहीं। निरीक्षण के दौरान अधिकारियों को मौके पर कोई कीट-पतंगा दिखाई नहीं दिया, लेकिन दुकान की साफ-सफाई में कई कमियां नजर आईं। इससे यह स्पष्ट हुआ कि प्रतिष्ठान में खाद्य सुरक्षा से जुड़े आवश्यक मानकों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जा रहा था। खाद्य सुरक्षा अधिकारी नीलेश जसोलीया ने बताया कि दुकान में भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) के निर्धारित मानकों के अनुसार स्वच्छता नहीं रखी गई थी। इसी आधार पर बजरंग डोसा को तीन दिनों तक बंद रखने का आदेश दिया गया है। विभाग ने स्पष्ट किया कि इस अवधि में दुकान में किसी भी प्रकार की खाद्य सामग्री की बिक्री नहीं की जा सकेगी। संचालक को निर्देश दिए गए हैं कि दोबारा दुकान शुरू करने से पहले परिसर की पूरी तरह सफाई कराई जाए और खाद्य पदार्थों को सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं की जाएं।

प्रशासन ने दुकान संचालक को केवल सामान्य साफ-सफाई तक सीमित न रहते हुए कई जरूरी व्यवस्थाएं दुरुस्त करने के निर्देश दिए हैं। इनमें रसोई और भोजन तैयार करने वाले स्थान की गहन सफाई, नियमित कीट नियंत्रण, स्वच्छ पानी की उपलब्धता और स्वास्थ्य संबंधी जांच शामिल हैं। खाद्य सामग्री को सुरक्षित तरीके से रखने तथा भोजन तैयार करने के दौरान स्वच्छता बनाए रखने पर भी जोर दिया गया है। विभाग का कहना है कि खाद्य प्रतिष्ठानों में ग्राहकों को सुरक्षित भोजन उपलब्ध कराना संचालकों की जिम्मेदारी है। किसी भी प्रकार की लापरवाही लोगों के स्वास्थ्य के लिए खतरा बन सकती है। इस कार्रवाई के बाद जामनगर में बाहर भोजन करने वाले लोगों के बीच खाद्य सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ गई है। खासकर ऐसे प्रतिष्ठानों में जहां रोजाना बड़ी संख्या में ग्राहक पहुंचते हैं, वहां साफ-सफाई और खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता बनाए रखना बेहद जरूरी है।

पिता की हत्या का सात साल पुराना बदला, 250 रुपये की कुल्हाड़ी से रची विजय बाजिया की हत्या की साजिश

जयपुर। राजस्थान की राजधानी जयपुर में हिस्ट्रीशीटर विजय बाजिया की हत्या के मामले में पुलिस जांच के दौरान चौंकाने वाले खुलासे हुए हैं। सात साल पहले अपने पिता की हत्या का बदला लेने के लिए 21 वर्षीय अनीश गोल्या उर्फ जग्गू ने अपने साथियों के साथ मिलकर इस वारदात की साजिश रची थी। पुलिस के अनुसार, अनीश ने अपने साथियों के साथ पहले कुल्हाड़ियां खरीदीं, फिर उनकी धार तेज करवाई और मजबूत डंडे लगवाकर विजय की तलाश शुरू की। हमलावरों ने विजय की फॉर्च्यूनर कार का पीछा तो शुरू कर दिया, लेकिन कुछ समय बाद वे उसकी गाड़ी का नंबर भूल गए। इसके बाद उन्होंने इंस्टाग्राम पर विजय की रील देखकर कार का नंबर पता किया और फिर उसका पीछा करते हुए कालवाड़ रोड से जगदंबा नगर तक पहुंचे। वहां आरोपियों ने विजय पर हमला कर उसकी हत्या कर दी। वारदात के महज पांच घंटे के भीतर पुलिस ने चारों मुख्य आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के मुताबिक, यह पूरी घटना सात साल पुराने पारिवारिक और जमीन विवाद से जुड़ी रंजिश का नतीजा थी। पुलिस की जांच में सामने आया कि मृतक विजय बाजिया और मुख्य आरोपी अनीश गोल्या एक ही गांव के रहने वाले थे। दोनों परिवारों के बीच लंबे समय से विवाद चला आ रहा था। पुलिस उपायुक्त पश्चिम प्रशांत किरण के अनुसार, करीब सात साल प